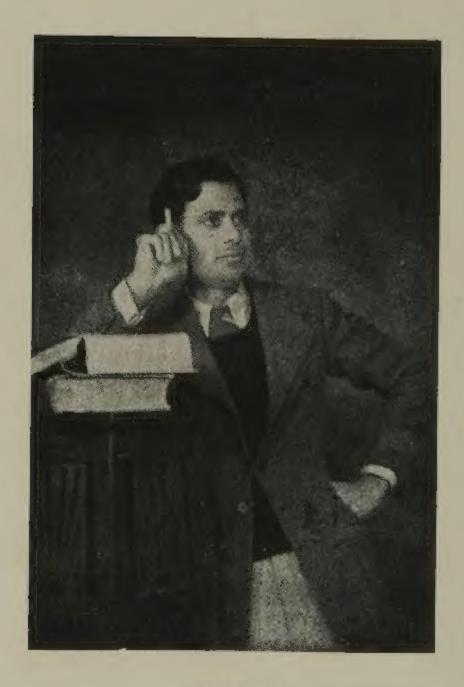


Prof. Dr. Harnam Singh Shan Principal Project Investigator U.G.C. Research Project on Sikhism 505, Sector 16, Chandigarh.

Apapso

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

लाला गुरांदित्तामल कपूर के अधिकार से कपूर आर्ट प्रिटिंग वर्कस ऐवट रोड लाहौर में छपा और सैकेटरी जसवन्त राय धर्मपुरा ने अपने अधिकार से छपवाया



जसवन्त राय

असली देवता ! पूज्य माता पिता जी,



पं॰ गुरबक्श राय प्रधान बाह्मण सभा रमदास जिला अमृतसर।

भेटा

अपना आप

श्रोनां सज्जनां दी जेड़े मेंनु प्यार करदे

जसवन्त राय

ता विशे कि विशेष कि व

I S SPILL IN PROPERTY SERVER SERVER SO

धन्यवाद

- (१) अपने भरा पंडित कंसराज गौहर दा धन्यवाद जिन्हां ने मैंनुं शायरी दी चेटक लाई।
- (२) अपने परम मित्र लाला हरकृष्णलाल जी भन्ले दा धन्यवाद करदा हां जिन्हां वरगे मित्र मिल ही नहीं सकदे एह मेरे ऐसे मित्र ने जित्र तरां सुदामा दे कृष्ण सन।
- (३) अपने बजुर्ग डाक्टर सर गोकलचन्द जी नारंग (क्ष minister Punjab), लाता खुराहाल चन्द जी खुरसन्द, लाला धनीराम जी अल्ला, सरदार कृपालसिंह जी मजीठिया, लाला अमींचन्द जी मेहता, 'डित राम सरन जी, पं० शिवशर्मा वैदाचर्य जी दा धन्यवाद करदा हां जेड़े मेरे तुच्छ जीवन दे रहबर ते सहायक ने।

(४) सब तों बद्ध धन्यवाद कुमारी प्रकाश शर्मा दा करदा हां जिनां दे उत्साह नाल एह पुस्तक छपी एनां ने उरद् अखरां विचों हिन्दी विच कवितावां लिखियां परूफ देखे अते एनां दी प्रेरना नाल ही मैं अपना आप छपवीन दा यतन कीता।

'जसवन्त राय'

IF THE OLDER THE TOWN THE THE R.

to the the string or our pure of their in the

mor trains busine rat that the pass

MARKE WHE THERE IS IN THE THE IN THE PERSON OF

ग्रपना ग्राप

में बचपन तों ही लीकां मारनीयां शुरु कर दितियां सन । सब तों पहिलों भल्ले दी हट्टी ते इक कविता लिखी सी पर औ स्कूल दा जमाना सी । किसे नुं की पता सी कि ऐस तों बाद ऐसीयां र कवितावां लिखियां जानगीओं जेड़ियां इक किताब दी शकल विच छप के लोकां दे घरों घरी बड़े र पवित्र हत्थां विच पहुँचनगीयां । मैं अपने आप नुं बड़ा मागां वाला समकांगा जे एह कवितावां लोकां दे मन पसन्द अते लाभदायक होन ।

'जसवन्त राय'

相

मुख-बन्ध

जसवन्त जी दी कविता दा पंजाब दे कीने कीने विच चरचा ए। एनां दियां कवितावां ने इक अजीब रंग पैदा कर दिता ए। एनां दीयां कवितावां राह जाखू मूं जांदा ए। हर मन्दिर दीयां क्या बातां ने। साड़ी न बल्ड़ी खराब कर दे। परदेश दी दुनियां, बागड़यानी। बे नजीह कवितावां ने कई बार पड़ीए फेर वी जी करदा ए पढ़ दे ही रहिए। जसबन्त जी दी कविता किसे परचे दी मुहताज नहीं। मैं महस्रस नहीं करदा कि लगां चौड़ा मुख-बन्ध लिखां। एनां फुलां दी महक आपे ही अपना आप दरसदीए। बोली दी सादगी, शब्दां दी मिठास, काव दी लटक ते नाच आप तहानुं अपनी तरफ

खिचनगे। पिशरी सामने होवे ते त्रोदी तारीफ करन दा कोई फायदा नहीं। योनुं गुँह विच पौन नाल फौरन पता लग जांदा ए कि मिठास की हुंदी ए। मैं कालिजां दे श्रोफ़ैसरां वांग २० (वी) सफ्रे दे मुख-बन्ध लिखन दा कोई फायदा नहीं समभदा । नाले जे किताब दे विच कुज नहीं होवेगा ते लमां चौड़ा मुख-बन्ध की करेगा। ज्ञानी जसवन्त राय जी दी कविता यंजाव वासियां दे अग्गे रक्ख दा हां पही ते आनन्द लवी। एनां दी कविता विच नकल ते चोरी दा अंग बिल्कुल नहीं। एनां दे गुन्दरतयां विच गुवान्डियां दे बागां विचों फुल चुरा २ के नहीं लाये गये गुरु बागी दियां नकलां उद्, अंग्रेजी, फारसी दियां गज़लां दे तरज़में नहीं कीते गए नित्रयां २ नवें रंग दियां किवतावां, नवें खियाल, कुद्रती नजारे, घरेलू जीवन दे हाल, नवीं पुरानी सभ्यता दा टाकरा अजीव ढंग नाल दिस्सिया। कविता दी इक २ सतर दिल विच खुब के असर छड जांदी ए। जेड़ी कई वारी अपने आप मुँह चौं निकलदी रैंहदी ए । अते श्रोदा किनां २ चिर स्वाद औंदा रहन्दा ते सरूर चढ़या रहन्दा

ए। जसवन्त जी विच कुद्रत समभन दा शायरी मादा रब्ब वलों कुट २ के भरया होया ए। कोई वी सीन लिखना होवे तां कमाल कर छड दे ने। आप ने (माँ दे प्यार) विच मां दी ममता दा क्या सोहना नकशा खिचया ए। बच्चे नुं लोरी देना अते उस तों वारी सदके जाना, ममता दी असल तस्वीर खिची ए। राम दी याद विच आप सीता दा मुसीबत दा हाल दस्सदे होये लिखदे ने।

जिस भरने ते जा वैंहनी आं। श्रो वगनों ही रुक जांदा ए॥

जिस रुखड़े नाल खलोनी यां। यो मुडों ही सुक जांदा ए।

ऐदे विच किन्नी ठोस असलीयत भरी होई ए।

मुसीबत दा सारा हाल दो सतरां विच दस्स गये ने।

१६ पड़न नाल मुसीबत दी सारी कहानी अक्लां समने

श्रा जांदी ए। एही ही नहीं हर रंग विच कपाल कर छड़या। परदेश दी दुनिया विच पंजाब दे सीन लिखे ने।

> कि नूर पीर दे तड़के तुँ बलदां दियां टिल्लयाँ सुनियां सी घुपक पदानी छनक चूड़े दी सुरां दुबिल्लयां सुनियां सी

क्या सोहना रंग ए महानी दी घुमक ते चूड़े दी छनक क्या अजीव साज ने क्या स्वादिलयाँ सुरां ने। अग्गे वी कई किवयां ने पिंडा दे सीन लिखे ने पर जसवन्त जी ने एनां दो सत्तरां विच नवें तरीके नाल सादी बोली विच इक वक्खरा ही रंग भर छड़या ए।

前

होर सुनो नूरजहान दी कविता विच-

जिस दी जुल्फ दे हनेर विच ।

मन मानीआं करदा रिहों ।।

जिस दे हुस्न दे चानने ।

जीवन दा राह चलदा गियों ।।

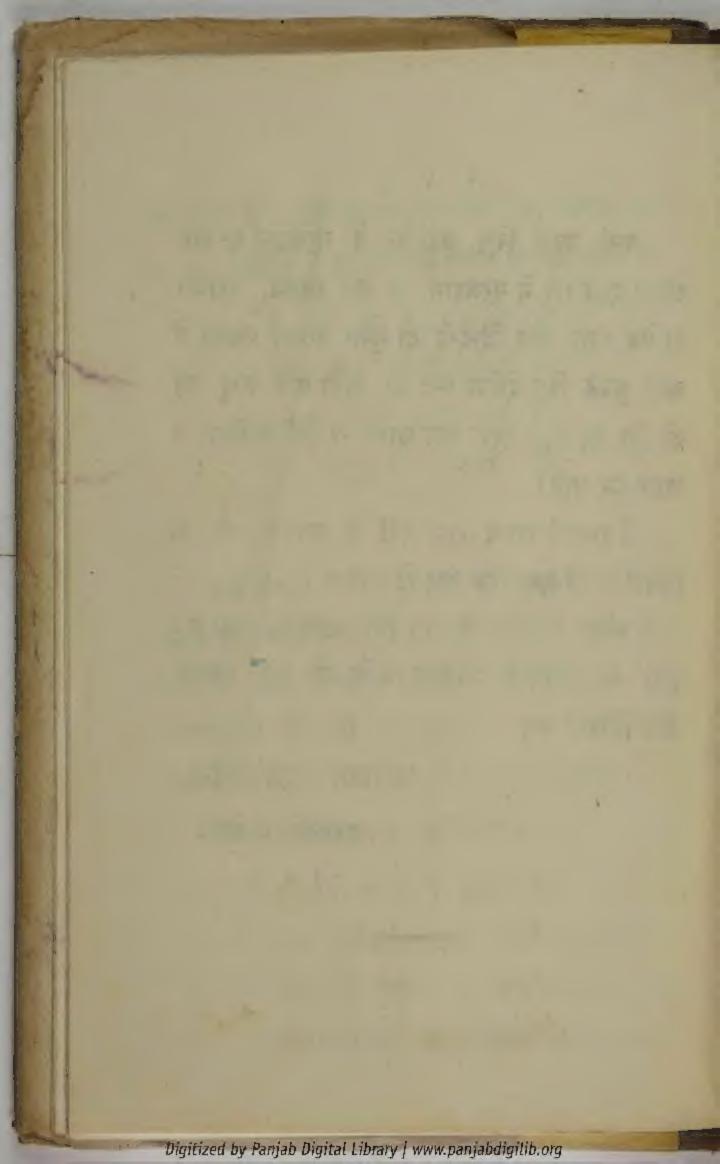
एनां सतरां विच जहाँगीर ते नूरजहान दा सारा जीवन दस्स गये ने नूरजहान दा रूप सुहपन, जहाँगीर दा प्रेम प्यार अते जिन्दगी दी गुजर इस्तरां बन्नआं ऐं मानों कुज्जे विच दिया बन्द कर दिता ए। जादृ ओं जो सिर चढ़ बोले एहदा नाम शायरी ए जेड़ी पढ़िद्यां २ असर कर जावे।

मैं इसतरां दहसन लग पवां ते जसवन्त जी दी किताब नालों मुख-बन्ध वड्डा हो जावे।

अपना आप पड़ के मेरा चित्त प्रसन्न हो गया ए। तुसी वी पड़ोगे ते आखोगे कि मैं जो कुम लिखया ठीक लिखया ए।

> राम सरन पंडित एडवोकेट लाहौर।

> > 1. 4. 43



किथ्थे-कौन

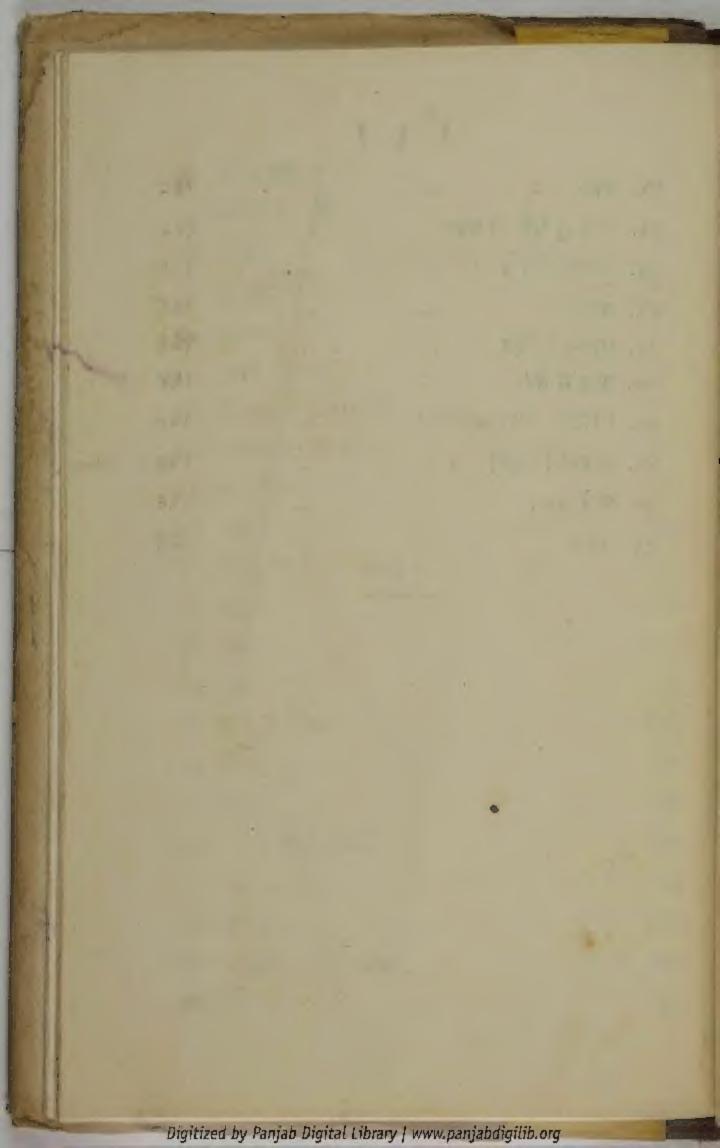
3.	शायर	***			. ?
₹.	अपना-आप	***		***	. ३
3.	माँ दा प्यार				É
¥,	पिंड दी कुड़ी	***		***	१४
X.	थेह	***			38
ξ.	गरीव दा सियाल	***		***	२१
10.	मेगा वतन पंजाब	***		***	28
S.	भूचाल			***	28
8.	राम दी याद	***		***	34
30.	राघे श्याम	,,,			35
28.	विस्रौड़ पढ़ाकू	A # <		***	88
१२.	अज कल दे मुंडे			484	84
१ ३.	नवें जमाने		111		४२
28.	अज कल दी माँ			T	¥3
RX.	किव दो अनपढ़ बौहर	ही			219
	अञ्चत की पुकार			***	इर
20.	पहाड़न			1 ***]	 Ę¥
(5,	नूर जहाँ			***	40
38	वागड्यानी			445	(05

(2)

२०. गरीव अते वसन्त		٠ نوچ
२१. परदेश दी दुनिया	***	50
२२. एक्का	10000	EX
२३. नुमाईश दी सैर	244	55
२४. जोगन		33 27102 £ €
२४. भरम मुलावा	00	Patrelleum \$00
२६. महाराजा रणजीतसि	₹	६०१ मी श लाय
२७. महाराजा खड़गसिंह	***	वृत्तिक का मुख्य
२=. हर मन्दिर		1882
२६. जह	·	च्यानी स्व वर्गात ११८
३०. जो करदा है सो भर	दा ए	माजारे सम्बास १२२
३१. बिरहों	Vec (1)	१२७
३२. रात		\$30
३३. तीवीं		(2) 27 934
३४. कवि तु मेंहना		938
३४. टैगोर	***	359
३६. शहीद	***	482
३७. मनाह दोश्रां लैहरां		*** \$88
३८. सेहरा	87	188
३६. सिखिया		11.
४०. परदेसी माहिया गीत		848
४१. वेदे आ	***	१४६
		A Section of the

(3)

85.	गजल	***	***	१४≒
83.	शाम नु राधे दा	ह्ना	***	\$XE
88.	जोबन सांभ के	***	***	१६०
84.	भजन	***	***	१६१
٧٤.	सावन दे दिन		***	१६३
80.	ढोल मैं तेरी		***	१६४
85.	चिटियां दुध च	ान नियां	***	१६४
88.	कुड़ियाँ चिड़ियाँ	***	***	१६७
yo.	चीरे वाला		***	379
χ٩.	गज्ञल	***	***	१७१



शुद्धि-पत्र

अपना आप पढ़न तों पहिलां शुद्धि पत्र अनुसार ठीक कर लेना।

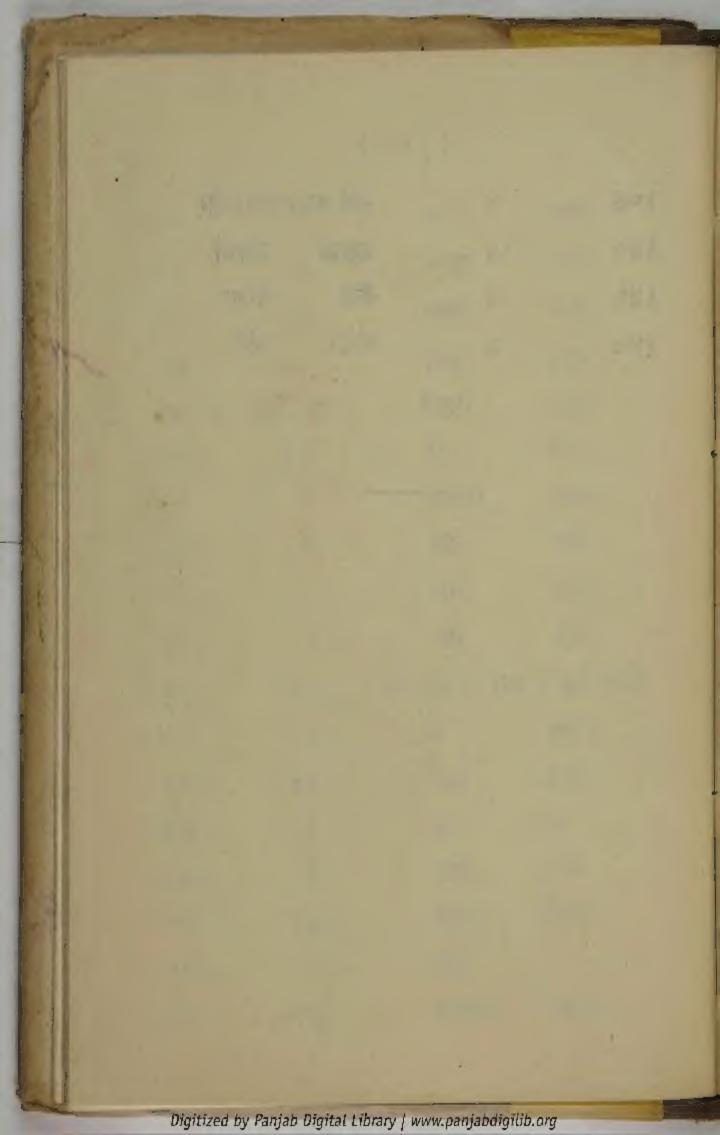
सब तों बड्ढी गलती (ब) दी ए। व दी जगह ब लिखया होया ए। जैसे (बिच) नु बिच वेखनां नु बेखना। व्याह ब्याह आदि।

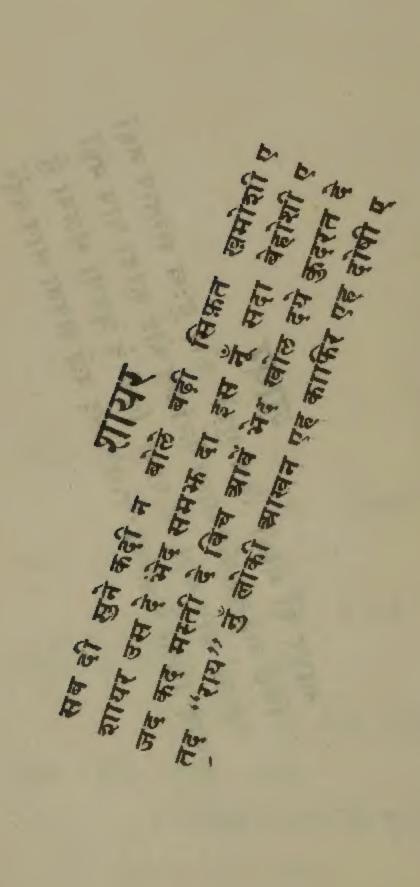
सफा	सत्तर	गलत	ठीक
~	१८	सज्जे	सुन्जे
28	१२	जालियां	पंजालिया <u>ं</u>
२०	१०	बेंहदे	वेंहदे
२५	2	ब्लिला	लिल्लां
२६	१६	जरलाहाद	जन्नाद
32	9	डांगा .	डांगां
88	१६	फडउदी	फाडदी
84	१३	चाड़या	चढ़या
38	2	बचेड़	बखेड़े

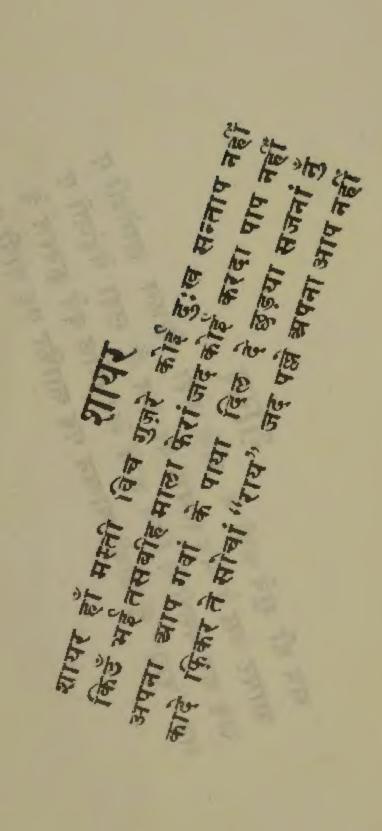
y o	3	भर	भरया
Йo	१५	टब्बर	टब्बर
18	१३	वग्गी	. व्यमी
48	2	मिल	मिस
ev.	सिर खेख	बोहटी	वोहटी
80	१२	वौ	थ्रो
90	=	भालदा	चलदा
30	3	वल्ली	वल्लों
= ?	3	वांग	वांगू
⊏ ३	Ä	वीर	वीरे
22	88	सौं रब्ब दी राय	न भूठ आखे
80	Ę	ने	वध ए
93	84	मैला	मेला
83	8	इन	इक
33	8	जाये	जापे
१०१	8.8	कैंहना	खैहना
१०२	23	नहीं	19
808	१६	बेडीत्रां	वंडीयां

/)
	3	- 1
١.	~	- 7

305	8	नवां बना	ह गया होर
880	१६	उलकां	डलकाँ
\$88	Ę	तंगा	तरंगा
१४७	3	श्रंक	श्रंग







श्रपना श्राप

THU THE B LOS T THE

अपना आप पछान श्रो बन्दे,

श्रमना आप पछान ।

बन्दा है बन्दे दा दारू,

बन्दा है बन्दे ते भारू ।

बन्दा है बन्देशों दा दरदी,

सदा बन्दे नुं बन्दा मारू ।

बन्दा आपे दुनया सारी,

क्यों बनिया अनजान श्रो बन्दे ।

अपना आप पछान ।

मैं नु मैं बिच पकया करले, ताने मेहने सिर ते जरले । एह दुनिया है कावां रौली, अपने उत्ते निश्चय घर ले । तेरे तों सब दुनियां चलदी, तु त्रापे भगवान त्रो बन्दे। अपना आप पछान । श्राप भ्रलाई दैठें, अपना श्रपना श्राप गुवाई बैठैं। तुहीं तु हैं होर न कोई, मैं बिच लोक लुकाई बैठें। आप मोए जग परलो हुन्दी, एह गल पक्की जान स्रो बन्दे। अपना आप पछान। जिस नु कदी किसे नहीं डिहा, श्रो जग भूठा एइ जग मिठा। अग डिठे दी शाहदी कादी, पोथियां पोथे भूठा चिट्ठा ।

तेरी है सब कारसतानी

तुहियों रब शैतान त्रो बन्दे,

त्रावा द्याप पद्धान ।

श्रोहला है इक दुनियां सारी,

ऐवें फिरदी भरमां मारी।

जो वेखे त्रो दस्स न क्के,

एहो है उस्तादी भारी।

श्रोहले दे विच श्रनयां वांगू,

क्यों करनी गुजरान श्रो बन्दे।

श्रपना श्राप पद्धान।

माँ दा प्यार

मैं नहीं जानदा सां माँ पत्रो मेरे,

मेरे नाल वयों करन प्यार ऐनां।

चूरी घत्रो खरड दे विच कुट के ते,

बित्रा मोजन क्यों करन त्यार ऐना।

दुध पित्रौन उठाके सुते होए नुं.

न करां ते करन लाचार ऐना।

बदो बदी श्रो छडन पित्रा के ते,

होवन मेरे लई वे करार ऐना।

पता लगदा नहीं सी गल कीए,

रुस पवां ते मैंनुं बरीन आके।

रो पवां ते चुप करौन आके, लड़ पवां ते मैंनुं मनौन आके।

THE PERSON NO. (SEE

कोई कम विगाड़ां ते माँ घूरे,

पत्रो आख देवे पता वाल तुं की।

बहा होवेगा आपे ही समभ जाऊ,

बच्चा जानदा जग जंजाल नुं की।

इहते बादशाह भोलिए ऐस वेले,

दस्स आखदीएँ सोहने लाल नुं की।

इहते गल मामूली ई चीज कुज नहीं,

समभां ऐस बदले जान माल नुं की।

सारी खट्टी कमाई ई ऐस दे लई,

सारी खड्डी कमाइ इ एस द लइ, लोकी पुतां लई करन व्योहार ऐना। (पर) मैं नहीं जानदा सां माँ पिश्रो मेरे, मेरे नाल क्यों करन प्यार ऐना।

चुन्नी भाबी दी लाह लंगार खौना, किसे ताई दा कुड़ता लुका देना। भाबी कडनियाँ गालां ते इसना मैं, रोना ताई जे थफ़ड़ टिका देना।

जिने कम दसनां उस नाल रुस जाना,

श्रोदे वलों ते मुख भवा देना।

मैं इसनां खेडनां नाल त्रोदे,

जिने कुभ न कुभ खवा देना।

कुक विगड़ जावे मैंनुं फिकर कुक ना,

कुभ सौर जावे मैं जुं चा कुभ ना।

मैं खाना ते खेडना मस्त रहना,

लध्थी चढ़ी दी मैंनुं परवाह कुक ना।

जदों पंजाकु बरहयां दी उमर होई,

पूज्य पिता छड आए स्कूल मैं नुं।

इक दिन मछरिश्रां फिरां स्कूल जाके,

अन्दर रखना भुल गया स्टूल मैंनुं।

द्जे दिन मुनशी जी ने सद के ते,

गल २ ते दसया रूल मैं नुं।

श्रोथे पढ़ना पड़ाना सवाह सीगा,

सज्जे अपना आप न मूल मैंनुं।

बस्ता घरदियां दे अग्गे मारया ठा, गया पढ़ना पढ़ौना खसमा नुं खा। मुन्शी डंडआँ दे नाल मारदा ए, मैं नहीं पढ़न जाना लालै जोर तुं जा।

माँ श्राखया श्रोंतरा परे मुन्शी,
लाके हिकदे नाल पुनकार दी ऐ।
श्रथरू पूंजदी ते मुँह चुम दी ऐ.
नाल प्यार दे थिपश्राँ मारदी ऐ।
दिल बिन सोचदीऐ मुन्शी मारया कियों ?
कीती ऐस कोई गल बिगाड़ दी ऐ।
चुमे चट्टे ते करे प्यार नाले
होली २ नाले मैंनू ताड़ दी ऐ।

पुत्र सबक नहीं सी आया अज तैनुं, लड़ पत्रा या कुक बिगाड़ आ सी। प्रेम वस होके सब कुक दस्स दिता, क्यों मुन्शी ने कंबया काड़ या सी। दूजे दिन मैं उठदियां यड़ी बही,

प्री हथ देके कैहंदी उरी दा नहीं। जेड़े कम बलों मुन्शी ठाक देवे,

मुड़ के कम उलटा ज्या करी दा नहीं। फेर घूरे ते आन के दस्स मैंतुं

मेथों दु:ख तेरा बच्चा जरी दा नहीं। गैर हाजरी रोज दी सोच कुभते,

त्राना दएड दा मुर्खा भरी दा नहीं।

गल माँ दी बन्न मैं लई पल्ले मैंनुं कोई न सजनों दुःख होया बड़े मजे दे नाल मैं उमर कड़ां दुःख की आनन्द ते सुख होआ

वरेह दस जद बीत गये पढ़दियाँ नुँ.

फुटी मस्स ते मैं बी जवान होया। छोटे वडुयां नाल विहार होया,

बोल चाल दा मैंनु ज्ञान होया। सोहलां सौन दा साह मन्जूर करनो, मेरे सोहरियां वलो फरमान होया। जिहर देखया मैं सारे फिरन फुल्ले, मेरे ब्याह दा सब सामान होया।

अन्दर तिविद्यां घोड़ियां गौंदियाँ सी बाहर बैंड बाजे पये वजदे सी श्रंग साक ते यार भरा सारे जंजे जान नुं गजदे सनदे सी

मौजां कर दियां ते बुल्ले लुटिदयां चुँ,

मैंनु फाईयां दे विच फौन लगे।

भारु मगर मेरे इक लौन लग्गे,

मैंनु पुत तों पिश्रो बनौन लग्गे।

मेरे गल जालियां पौन लगे,

दुनियां दारी दे वेलने वौन लग्गे।

गल गुक्कदी ब्याह हो गया मेरा,

पिएडत होली जई ऐह फरमौन लग्गे।

जो कुम खट्टें कमाएंगा बौहटी तुं दई' इह लिखिया वेद पुरान दे विच इह तेरी ते यज तों तुं एहदा मन्नीं गई इह गल जहान दे विच

ब्याह हो गया खट्टन कमौन लग्गा,

जो कुभ खट्टां कमावां मैं खावां आपे।

घर वाली दे टसन वी करां पूरे.

सारे दुनियां दे सुख हंडावां आपे। मेरे घर कोई आवे ते क्यों आवे.

जे बुलावां ते कदी बुलावां आपे। रवादार मापे इक पाई दे नई',

पैसे खोनां तों सगों मगांवां खापे।

परत्रो अजे वी मेरे तो जान सदके मेरा करन श्रो चाह मल्हार ऐना (पर) मैं नहीं जानदा सा मां पिश्रो मेरे मेरे नाल क्यों करन प्यार ऐना बरेह दो ब्याह नुं जदों बीते,

पैदा इक मेरे घर लाल होया।

च्चोदे जमदियाँ पईयाँ मालूमियां सब,

मेरा होर दा होरई हाल होया)

जेकर किसे ने बालु नुं भिड़क दित्ती,

में खित्र के ते लाली लाल होया ।

पंजे उँगलां मुंह विच हका बका,

लोड़ा बजया एह की कमाल होया। बाल रोवे न रोवे यां पया रोवे,

में अपने आप विच खिसदाहां ।

भिड़कन वाले नुं भिड़कां ते करे ठहा,

पया अन्दरो अन्दरई रिभदाहाँ।

घर वाली नुं बेखां ते होर हालत,

लोरी दे आखे पर जां छकड़े ।

तुं क्यों रोना सी वे तेरे रोन बैरी,

वे मैं घोल घत्ती तेरी मां छकड़े।

हगे मुत्ते ते मूल न बोल दी एह,

मैलां घोंदी बी कहे मर जां छकड़े ।

दु:ख सुख जे बाल नुं हो जावे,

मैं वीं छकड़े बाल दी मां छकड़े। हालत वेख के पुछित्रा जी कोली, हुंदा तुँ क्यों वे करार ऐना।

दुःख सुख शरीरदा भोग है जे,

ऐस गल उते हाहा कार ऐना।

एह जवाब मिलया तेरे वस कुछ नहीं,

तेरे अन्दर प्रेम दी तार चल्ले। खुन वेख के उछल दा खून तेरा,

एह जग दा धुरे व्याहार चल्ले। खुह खुहां ते त्राखदे रुह रुहां,

मेल दिलां दा मोह प्यार चल्ले। तुँ नहीं समभाया ऐ तेरे खून अन्दर,

इक खून दी बखरी धार चल्ले।

"राय" रव प्रेम दी तार अन्दर, बहा होया ऐ वेख संसार ऐना। (ते) हुन् भैं समक्तया जे मां पियो मेरे, मेरे नाल क्यों करन प्यार ऐना।

पिंड दी कुड़ी

जद डिठा सूर्य राजे दी मुँह जोर सवारी औंदी ए,
तद रात सांम्भ के जुलफा जु पई अपना आप लुकोंदी ए।
कल शाम तो अज सवेरे तक फिरदी सी अन्दडवांजे ओ,
कुज पता नहीं किस जुकर बिच जाबैठी इकल बांजेओ।
ओ ज्यूं २ नेड़े औंदाए रंग बगा हुन्दा जांदा सु,
खबरे क्यों ऐना तरेंदी ए डर खबरे कादा खांदा सु।
रात पिच्छा परत न डिठा ए अड्डी न भौंते लाई ए,
सूर्य ने पब्बां परने हो कालक दी अलख मुकाई ए।
मैं समक्तया सूर्य मार छड्डी कर दिती रात हलाल जई,
चढ़दे वल इल्ला खून ज्या तांईयों कुछ बदली लाल जई।

नहीं सुबह सुहागन बन ठन के इक लाल दुपट्टा लीता ए, ते अग्गल बांडी मिलने नु रस्ते विच डेरा कीता ए। अर्थे हर जांई शौह सूर्य वी घुट २ के जिफयां पौंदा ए, रस भिन्नी सोहल पलुकड़ नु इक नृरी रंग चढ़ौंदा ए। फिर चिरी बछुन्नी मेलन नु त्रो तेजने जौहर बखौंदा ए, किरणां दियां छमकां खडियां ने सबतुने लोक जगौंदा ए। श्रो पिंड अन्दर इक कुड़ी जई कुक अल्हड अते क्वारी ए, अनजान जई अनभोल जई शीतलता नाल शंगारी ए। श्रो साद मुरादी देवी वी सूर्य दा हथ वटौंदी ए, घुमकार महानी पोंदी ए सुतियां नुं पई जगोंदी ए। उस बीबी रानी देवी ने दो घड़ियां फेर महानी तुं, चाटी इक पासे रक्सी ए त्रो जांदी खुह ते पानी नुं। डंगरां दा गोत्रा पथया ए रोटी दुकर वी कीता सु, कुज दिता भैन भरावानुं कुभ श्रापे खादा पीता सु। बधा ए दथ्था दोहडां दा लस्सी दी चाटी चाई ए, मुड़के बिच लीडे गुत्ते ने पैली दे बनने आई ए। तिन हाली पैली बौंदेने तत २ दा राग अलापन अो, खुच्चां तक घट्टा चढ़या ए डंगरां नाल डंगर जापन खो ।

चो सोहल मलूक श्रनजान जई किकर दी छावें वहेंदी ए, त्रों सड़दी धुर्पो ब्राई ए पर मुखों कुक न कहैंदी ए। दो सेपी ते इक चूहड़ा ए तिनांने इल खलआरेने, जट्टां दियां वट्टां चौंके ने वाहनां दे विच गुजारे ने । श्रो रोटी दुकर खांदेने श्रोजुले खोले बलदां दे, जा खुह ते पानी दौंहदीए पई कारे करदी पर्दा दे। क्रो नारी ए शरमांकल ए पर सारे कम निभौंदी ए, हाँ अपेले सौले कारे तो अपे मूल नई घवरौंदी ए। मथे ते मुड़का आया ए ज्युँ कुद्रत मोती लाये ने, सूर्य दी चिट्टी लाल किरन श्री पनने लाल बनाए ने। चेहरा ज्युँ लाल ज्वाला दा इक नूरी भलक विखौंदा ए. श्रो सहज दया दा सोमा ए प्रतीच नज़र पया श्रौदा ए । खुश रंग शरीर सुडोल ज्या सुखांदी सोहनी सुरत ए, सुन्दरता इल २ पैंदीए अम्बर तो लथ्थी मूर्त ए। ऊंज सोहल मलुकड नारी ए पर सबर शुकर विच रंगी ए, उस हार शिंगार जवानी दा इक रबों मेहनत मंगी ए। श्रो अपने घर दी बरकत ए लोकां दा गुक्त सहारा ए, त्रो मेर तेर दी वैरन ए उहदा इक जगत न्यारा ए।

श्रो अपने घर दी रानी ए की लेखा श्रोस सवानी दा, श्रो करे ते लोकी खांदे ने धन जिगरा श्रोस सयानी दा। के श्रोदे बांगर हिन्द पया साराई कार वेहार करे, तां क्यों न छड गरीबी नुँ रख खावे भौज बहार करे। "राय" जे रब सयानफदे की बिगड़या डुले बेरांदा, हिम्मत करिये कुक पता नहीं उस रब्बी हेरां फेरां दा।

DISCHOOL OF A STATE OF THE PARTY OF

NAME OF BUT OF BUT OF THE PARTY OF THE PARTY

थेह

07

(in the list ma)

O S floor Sail of Ste To pain The Bill

TO LEGIS TO SEE THE PERSON IN STATE

The same in period wally a fing in the fire

THE THE REST OF THE PERSON OF

(थेह नु दूरों वेखके किव दे ख्याल)

श्रो ! ढेर क्या ए पद्धर ते, श्रम्बर तो तारा दुटिया ए ? या श्रम्म लगी ए घरती तुं, कोई जिगरी छाला फुटया ए ? कि बाल नाथ दा टिल्ला ए जिथे उस धुश्रां लाया सी ? रांभन नुं मुंदरां पाईयां सीं जोगी नुं जोग सिखाया सी ? ऐसे नुं श्राशक शिरीं दा तेशे थी कटदा मोया सी ? ऐथे फरहाद विचारे ने किस्मत दा रोना रोया सी ? इह कन्न ससी दी लग दी ए दुःखां दी वस्ती वसदी ए पुन्तु दी सांभी ढेरी ते पई रेत थलां दी हसदी ए महिंवाल ने ऐसे टिलेते पट चीर कवाब बनाया सी ? तुल्ले दे एस श्रावे विच सोहनी ने इशक पकाया सी ?

(थेह दे उत्ते पहुंच के)

चीनी दे बन्बर जापन जयुँ भांडे सी किसे सवानी दे ?

श्रो पैसे बड़े पुराने ने रिजया बेगम जई रानी दे ?

श्रोह ! थेह हैं किसे जमान दा जापे जयुँ शहर शहाना सी ऐदे ंग महल्लां दा श्ररशां तो परे टिकाना सी ?

कये सुन्दर महल सुनारे सी कई सोहनी मीनाकारी सी इह मात लोक विच इन्द्र दे महलां तो वद श्रद्धारी सी नेजे दा नुका सुरया ए श्रो टोटा जापे ढालां दा ?

कोई योद्धे ऐथे रहैंदे सी इह शहर सी जंगी लालां दा हरां नुं साड़ी जांदेसी हाए हार शङ्गार शङ्गारां दे ?

दश्रोते, परछावें बेंहदे सी हाए सोहल सुन्हकड़ नारां दे "राय" इस शहर श्रज्ज्वे दी मालिक ने कला भवाई ए दुनियां दे सारे मज्ज्वां दी इह सांभी कवर बनाई ए

ग़रीब दा सियाल

पुज के ग़रीब नुं ग़रीबी पई मार दी ए, घोर जई कुल्ली जिथे उमर है गुज़ार दा। केरे बांगू केर दी ए छत मिट्टी सिरां उत्ते,

मध ते मघोरयां नुं रहन्दा नित मारदा। छत हैहंदी जापदी ते हेठां श्रीना सुजदा ए,

रहन्दा ए धवका जिवें दिक दे विमार दा।

बचयां नुं सांम्भ दा सवाल दा खियाल नाल,

चल दी न वांह नहीं ते महल चा उसार दा। पंजाधियां पुत्रां दा सांम्सु ते संम्मालु कल्ला,

जिन्द जान अपनी नुं जिनां उत्तो वारदा।

नहा भजा फिरे श्रो दश्राड़ी सारी नीमों माना,

धेंला वी न लब्बदाए मंदा कम कारदा। दिन डुब्बे आवे जदों बच्चयां नुं खुशी होवे,

बचा बचा दौड़ के ते जिफियां है मारदा। बापू मैंनु पैसा वी दे ऊची २ रौला पौंन,

श्रोनानुं की पता होने बापू जी दी सारदा। श्रोनानुं ते श्रोहो बापू राजयां दा राजा जापे,

पता की ए बच्चयां नु खोदे कम कारदा। अपने पिछे, वेख के ग़रीब धियां पुत्रां नुं,

वस्रो वस्र लाड नाल पया पुचकारदा । विचो विच भूलदा ग़रीबी दियां कोरियां तो,

त्रोड़ थोड़ लोड़ हथों हार के ते हारदा। नंगे पिंडे खेड़दे गुज़ार दे दहाड़ी बाल,

मिट्टी घट्टा लतयां तुं कोई न सवार दा। लंगदा हुनाला ते सयाला आन गजदा ए,

रत्र होर माङ्यां नुं गड़े मार मारदा । तन उत्ते कपडा न सुक के हडीड़ होए.

चेहरा वेखो आदमी दा हाल ओदी नारदा।

दंदोडिके वजदे ने गुच्छा मुच्छा होई वैठी,

खुलदे न हथ पैर पाला पया ठार दा। दोवें ने रज़ाईयां खोवी वडुयां बनाईयां होइयां,

लीर २ गएडी होई गाहन जे लंगार दा।

छोटे दो सवानी नाल वड्डे श्रोदे नाल सुते,

सौना जरा वेखना गरीव दे परिवार दा।

खिचदा जे आप ओ रजाई बच्चे नंगे होन.

रौला रैइन्दा बच्चयां दी हाल ते पुकार दा।

बच्चयां नुं सांम्भ दा ते दकदा यो फेर योवे,

आपा पया सारी रात पाले विच ठार दा।

ऐदों भेड़ी रात ओ सवानी पई कट दी ए

दुःख दोवां जीयां उते सारे संसार दा।

''राय'' एह सयाल केहर माड्यां ग्ररीबा उत्ते.

मोयां होयां माड़यां ते केहर है गुजार दा।

मेरा वतन पंजाब

शिव जी बांग हिमालया खड़ा सिर ते,

जटा जूट ते गंग दी धार सोहनी। सतलुज राबी ब्यास चिनाब जेहलम,

पंजा पीरां दी बधी कतार सोहनी। एधर जम्रुना ते देवते करन राखी,

स्रोधर स्रटक दी तेज रफतार सोहनी। विद्यया घा दा मखमली फर्श किधरे,

किथरे महकवीं बाग बहार सोहनी।

श्री नगर कशमीर लाहीर शिमला ऐ र्स्वग नालों बदिया शान वाले लोकी तस्सदे ऐहना दे दर्शनां नुं लिल्ला लेंदे ने कुल जहान वाले

इरया भरया ते टैहकवां देश वस्से,

रब अपनी हथ्थी सवार दिता। चप्पे चप्पे ते नहां दा बगो सोमा

जट्टां लोकां दा दुःख निवार दिता। मार्फे मालवे वेट रिश्राड़की विच,

सारे अन्न दा छट्टा खिलार दिता। अन्न धन दिता दुध दही दिता,

मेवा जग दा कुल दातार दिता।

जिन्ना खान नुं श्रोनां हंडौन खातिर श्रोने किरती किसान कमौन वाले श्रोने मक्त परमेश्वर दे बीर श्रोने श्रान शान ते जान गवीन वाले

पूरन ध्रुव वरगो नाम जपन वाले, रब्बी जोत दे विच समौन वाले। गुरु अर्जुन ते श्री दशमेश वस्त्रे,

तेरे देव शहिदिआं पौन वाले। वेख खली ते मौत नुं हस्स देंदे,

त्रमहल हकदा नारा लगौन वाले। सिंघ सुरमें शेर दलेर योद्धे,

भवक मार के छवके छुडौन वाले।

तेरीयां सोहल मलुकडां नारीयाँ वी, कीती घट न घोर घमशान अन्दर चूड़े वालियां लाए तवाए ऐसे जीवें चरिडका बड़ी मैदान अन्दर

तेरा पानी न अमृत तो घट कोई,

तेरा अन्न हैं कुशते फुलाद तो वह।
जेड़ा जिम्मयां इक तो इक बिदया,

हीर रांभे तों शिरीं फरयाद तों वह।
जान देंदिआं मूल न सी कीती,

तेरे भगतां दा जेरा जरलाहद तों वह।

त्राखां सामने पुत्त मरवा दें दे, विक श्रीलाद तो वह।

तेग जेड़ी बी मारी आश्चर्य मारी कम केड़ा बी कीता कमाल कीता पैर पापा ए जेड़े घमशान अंदर दूती दुश्मनां दा बुग हाल कीता

सानुं पान है वतन पंजाब उत्ते,

जिथे वसदे बीर परिवार साडे।
जिथे थोड़ न लोड़ अनुसार कोई,

सानुं तंगी न कोई दातार साडे।
चाटी हरी रैंहदी कोठी भरी रैंहदी,

भरे रैंहदे ने सदा भंडार साडे।
सानुं तुसी ते असीं संसार ताईं,

पये पालदे हां पालन हार साडे।

"राय" शुक्कर है धन उपकार तेरा साडा वतन स्वर्ण बनाया ए तुं मात लोक दे विच ते धल्या ई तांवीं देवता रुप बनाया ए तुं

भूचाल

(इह कविता कोयटे शहर दे भूचाल ११३४ उत्ते)

बिज यान पई बैठयां सुतयां ते,

खिच पई असमान दे तारयां नुं।

गरकी कोयटे नुं पई ए पलक अन्दर,

कौन जानदा कुद्रत दे कारेयां नुं।

बखत पैन नुं जेडी बला आवे.

लम लैंदी ए हिन्दी विचारयां तुं।

सुन्दर सोइल मलूक न नार लब्भी,

लब्भा पिश्रो न पुत्र प्यारयां तुं।

इह भूचाल की कैहर खुदा दा सी, गज़ब ढाह दिता हिंदुस्तान उत्ते। जे हनेरई पैना सी पै जांदा, किथरे जर्मनी रूस जापान उत्ते।

महल अइ असमान थीं करन गल्लां,

सारे हैंह के मिट्टी दा ढेर हो गए। ऐसी उड़ी ए मिट्टी निमानव्यां दी,

मिट्टी सोने दे पर्वत सुमेर हो गए। कोयटा हो गया ए कबरस्थान बरगा,

परूं पटना द्रभंगा मुघेर हो गए। बाकी सारे जहान नं छड़के ते,

हिन्द उते भृचाल ने शेर हो गए।

जेड़े फुलां दा भार न सहन जोगे, स्रोनां छतां दे भार सहारे हाए। इक बार ही टब्बर ते बनी स्राके, किवें घेर के मौत ने मारे हाए।

EDINGER I

माई कोयटे तों आई हुं पुत्र बैठा,

बोली की तुं पुच्छना हाल बचा।

फट्टां अलयां ते लुन घृडना ऐं,

मेरा दु:खी होया बाल २ बचा।

नुद्यां धियां ते होर परिवार सारा,

छुड़ आई जवान ते बाल बचा।

डांगा जिड़े जवान सी चार पुत्र,

I the state of the

हों खो के लैं गया काल बचा।

ऐना आख दी ने भुन्यां मारियां ने, कि तुं फोलने फोलना हीरया वे । अज मैं औंत नखतरी होई विधया, मेरा गया कलेजड़ा चीरया वे श्रोहना सोहनयां रेशम हंडौनयां तुं,

डिठा पत्थरां दे हेठ हाए मर गई। मरदे वेखे मैं हिक ते रख पत्थर,

सिर दा साइ ते ड़िड दे जाये मर गई। अग्ग लोथां नुं लानी ते रही किथरे.

किसे कफन न श्रोना ते पाय पर गई। जी परचदा सी जिना नाल मेरा, चेता श्रोना दा बड्ड के खाये पर गई।

> मैं ते जियूंदी रही न मोई मुखी, नाम जियूंदियां विचतुं जान मेरा। लोकाचारी है जान च जान मेरी, उँज जग चों मुका निशान मेरा।

घर दैह के खोलयां बांग होया, रुएड मुंड होके कल्ली खड़ी रह गई। पई साह बरोलांगी उपर सारी, मैं निख़ाफनी बखतां नुँ फड़ी रह गई। मैं भी मुक्क जांदी फरता मुक्क जांदा,
मेरी जान क्यों हड्डां विच खड़ी रह गई।
जीक्या जन्त ते हुंजया गया सारा,
दु:ख भोगने नुं कर्मी सड़ी रह गई।

मोए खो नहीं मोई जो बची कल्ली, धक्का ला दिता मैंनुं सारियां ने। लुं लुं खन्दर चीसां पैदियां ने, भुग्गा चौड़ किता कर्मां हारियां ने।

पुत्र एह की पता सी सुतयां ने,

हाए २ सुसरी वांगरां सौं जाना।
ऐस बजर समान अस्थिर धरती,

उत्तों पाटना थल्लियौ धौं जाना।
किनुं खबर सी सिरां ते काल कुके,

जिने बांग भिन्विरयां भौं जाना।
सुख्ली लंदयां दी राती रब्ब आपे,
बन के नैन अलौनियां गौं जाना।

किथरे सोलहां सतारां चों इक बचया, किथरे उकी ही सकत सफ़ाई हो गई। ''राय'' सुकयां बचन दी आस कादी, जिथे हेठली ऊपर खुदाई हो गई।

राम दी याद

the same of the same of the same of

सीता अशोक वाटिका विच वैठी श्रीराम नुं याद करदी ए,

प्रीतम जी ! जानी जान तुसींकी औगन औगनहारी दा, स्वामी कियुं चेता भुल गया मैं कर्मा हीन नकारी दा।

त्रो पश्चवटी दी कुटिया दी याद श्रोंदी ते कुरलौनिश्चां, लच्मण दी लीक उलंगन दा मैं कोती दा फल पौनीश्चां।

इक पल बिच पोचा फेर गया मथे दीयां लिखिआंलेखा ते, पापी नुं जोगी जान लक्षा मैं कमली भुली मेसां ते। कद दर्शन आके देवोगे कद दिल दी अग्ग बुजाओगे,

की दिल दे फोले फोला मैं कुभ ज्या कलेजा धुखदा ए, सड़ बल्ल के कोला होगई आं कोई साह न औंदा सुखदाए।

जिस भरने ते जा बैहनी आं ओ वगनों ही रुक जांदा ए, जिस रुखड़े नाल खलोनीआं ओ मुंड़ों ही सुक जांदा ए।

सची जद विषता पैदी ए सुक जांदा पानी खुआं दा, सुँह दूजे पासे लग जांदा ए शांहां दयां वरूआं दा।

नित एही वियोगन चांऊदी ए बस सदा श्रन्धेरी रैन रहे, रोंदी नुं कोई हटकावे न तां दिल नुं भोरा चैन रहे

सूर्य दे लैंहदे लैंहदे ही दुनियाँ दी भड़कन लैंहदी ए, चन्न जए माही दे दर्शन नुं कुल नार बरोहीं बैंहदी ए। मैं सोगन ऐस मलेखे विच हत्थ जोड़ के चट खलोनी आं, पर फेर गलेड़ भर २ के मैं खड़ी खलोती रोनीआं।

चिटियां दुध रिशमा चन्द दीत्रां इक ठंड कलेजे पैंदी सी, श्रीतम जी चरणीं हाजिर हो मैं जन्म सुफल कर लैंदी सी।

ओ वेले चेते आ २ के पये दूना दुःख वदौंदे ने, कौतक तसवीरां बन २ के इक हांज कलेजे पौंदे ने।

गम अन्दरो अन्दरी खांदा ए दिस्स दी ओनीदी ओनीआं, दु:खांदी खेती सिंजन तुं पई हस्ट अखां दे जोनी आं।

भक्तां दी रचा करनी सी पृथ्वी दा भार मटौना सी, प्रीतम जी कोई जरूरी इह मैंचुं ही फस्ता पौना सी।

पापी दी अलख मुकावन तुं इह चङ्गा रहा पाया जे, दुनियां दा कष्ट निवारन तुं सीता तुं बङ्गा लाया जे। नित पारे बांग वेचैनी एं मैं लून बांग पई खुरनीआं, पर सदका तेरयां पैशं दा मैं सौ २ कोरे भुरनी आं।

स्रोकां तो डरदी मरदी नई कोई बोल कबोल न कह जावे, मत टिका किसे मुंह कालकदा रहेंदी दुनियां तक रह जावे।

सङ्ग सुकाधिमी बेह जावे स्वामी जी काम उडांदी दे, उङ्गलां ते मासा मांस नहीं राह लैंदी औं सियां पौंदी दे।

हुन होर तारीखा पाईयो न मेरे नाल थोड़ी होई नहीं, जसवन्त दर्श दी आसा ते जिऊंदी है हाले मोई नहीं।

राधे श्याम

त्रो ! शाम नी त्रो ! शाम नी । त्रो सावला घनश्याम नी । जिसनुं सुबह से शाम नी, दुनियां करे प्रणाम नी ।

श्रोसे ही सुन्दर शाम दी,

गोली हां में विन दाम नी।

त्रो श्याम सुन्दर श्याम नी,

मन महोन है गोपाल आहे। नी देवकी दा लाल आहे, शोदां दा भोला बाल आहे। चल दा अनोखी चाल ओ,

मैं फिग्दी उसनुं भाल दी।

जिस दे हज़ारा नाम नी,

घट २ करे विश्राम नी।

श्रो शाम सुन्दर शाम नी। श्रो शाम

गऊत्रां चराना सिखया, मक्खन चुराना सिखिया । बन्सी बजाना सिखया, रासां रचाना सिखया । मक्खन चुरांदे खांदयां, बन्सी बजांदे जांदयां । खबरे की मैंनुं जान के, अखां दी शहीं आन के। च्यो लै गया चो लै गया, की लै गया दिल लै गया। दिल लै गया चित चोर नी, मैं हो गई कुम होर नी।

करके	श्रन	ोखा ।	काम	नी,		
		श्रो	तुरया	जावे	शाम	नी ।
यो ।	शाम	सुन्दर	शाम	नी,		
		श्रो श	ाम नी		*****	1
दिल	नाहीं	मेरे	कोल	– नी.		
	***				फोलदी	1
ओदे	बुल	ायां			18 1	
		त्रोदे	मधुर	बुद्धां	वों बर्ज	1
फूक	इक	भगव				
		बन्सी	दी है	जिंद	जान र्न	1
बन्सी	दी	मिट्टी	तान	नी,		
		खिच	लंदी	मेरे !	गण र्न	1
करतृत	एह	नन्दल	गाल	दी,		
1.6					भाल द	1 1
रोंदी	हां	में ऋ				
					नस्सद	1 1
नहां	भेत	दिल द				
		हरद्म	सुनार	व गात	नी	-1

गीतां च दस्से प्रीत नी,

एह प्रीत दी है रीत नी।

गोल्ली हां मैं बिन दाम नी,

उस शाम दी! औ शाम नी।

श्रो शाम सुन्दर शाम नी,

भुद्धी हां अपने आप नुं।
जपदी हां ओदे जाप नुं,
बजी हैं ऐसी तार नी।
मैं आप हो! गई प्यार नी,
बही हैं ऐसी धीर नी।
मिट्टियों बनी अकसीर नी,
महियों वनी अकसीर नी,

मैं शाम आपे हो गई। पाँदे ने लोबी फिक नी।

पर शाम ते मैं इकनी.

हुन मेरी एह पहचान ऐ। मैं बन्सरी दी तान हां,

मैं आप ही भगवान हां।

बहा है ऐसा प्यार दा,

फिर दा है नाजां मारदा।

पागल सां जिसनुं भाल दी,

हुन आप मैंनुं भाल दा।

एह हाल है नन्दलाल दा,

ओ शाम राधे हो गया।

राघे मैं हो गई शामनी,

सांभा है साडा नाम नी।

दोवें ही राधे शाम नी,

मैं शाम दी हुन शाम नी।

मैं शाम दी हुन शाम नी।

श्रो शाम नी मैं शाम नी,

दोवें ही राधे शाम नी।

मैं शाम सुन्दर शाम नी

विग्रौड़ पढ़ाकू

जद फिरदा पिंड ओं नंगा सी। तद ओही सुहपन चंगा सी।

फुल २ के अम्मां बेंहदी सी

एह सदका तेरियां पैरां दा एह टिंग जई ए खैरां दा

रब्ब बूटा लाया सुखां दा इह होल हुंगारा दु:खांदा

श्रीफ ए विच सुखीं चड़श्रा ए वर भाग जगतदा बड़श्रा ए भुखीश्चां चा मल्हारां दी मैं नूह पुत्र दे प्यारां दी

> मैं निकका ज्या वियौना ऐ मैं नींगर हुने बनौना ऐ

सगना विच घोल घुमाई ने सुखना विच दून सुवाई ने

वियाह दिता पुत पड़ाकू नूं शौंकी जए सोहल शनाकू नृं

कालिज चों पड़ के आया ए घर वाली सबक पड़ाया ए

> इंगलिश इकनामक **भ्र**न्ले ने हुन ग्रेम शास्त्र खुन्ले ने

चा चाइत्रा नवें मुहांदे दा मुल कस्दा फिरां परांदे दा

उस नवीं बिहाई नारी दा बस हो गया प्रेमप्यारी दा

पल्ला फड़ बुस २ रोंदी ए मोडे नाल लग खलोंदी ए (88)

केंहदी एह कालिज जाओंगे फिर कद तक मुड़ के आओंगे

में तेरी मेरिया माहिया वे कालिज नुं जांदे साहिया वे

> कालिज नु जांदे महिया वे मेरे ऐनक गज सिपाहीया वे

दर्शन दी पिया सवाली जै

वस दर्शन जरा दिखाजाना इक घर वल फेरा पाजाना

दिल वदिल्या कालिज जादेदा खतरा नहीं भिड़का छादे दा

रस्ते चों मुड़ के श्रौंदा जे मां कोल बहाने लौंदा जे

पर्या सु खत्म पहाईयां दा

बस रेशा खत्मी होआ जे डोसे नाल गया परोत्रा जे पढ़ दाकोई पुत वियावे न वियता ते वियता पावे न

> "जयवन्त" बांग पछता योगे जद कीते दा फलपा योगे

ग्रज कल दे मुंडे

हुन ते फिरां मैं फुलया, बचपन दा बेला भुलया। बड़े कदे ने दस्स दे, जद दस्सदे तद हस्स दे।

करदा रिहा यन मानिआं,

बद २ के जो शैतानिआं।

बचपन दा जो २ कर्म ए,

सुन २ के औंदी शर्म ए।

गुण बी जे कोई याद ए,

ओबी ते बे बुनआद ए।

बचा सां की परवाह सी मिट्टी न दिल दी चाहसी

मंगना ते घुगु मंगना,
मंगेनों न मूलों संगना ।

न अप नुं काई चज सी,

न शर्म ते न लज सी।

खाना ते खाके लेड़ना,
छेड़ां बचेड़े छेड़ना।

भिड़कन ते भौंएँ लेटना रो रो के गुस्सा मेटना

> आपे दा न कुम ध्यान सी, दूजे दा न कुम मान सी। लथी चड़ी न जानदा,

गलियां दा घट्टा छानदा।

भुखा सां माँ दे प्यार दा या गप दी पुचकार दा

> मगरों जवानी घूक दी, अग्रई वी जादू फूक दी।

खररे की आखर आ गई,

भर पया हंकार दा फिरदा में फूकां मारदा

> हुन चाल ही कुम हो। ए. मुंडा हां वखरी टोर ए। पौंदा नवां नित खुट मैं. विदया तों विदया बूट मैं।

पौडर लविंडर पान ए जोदन दी वखरी शान ए

निवयां ही चिहयां रंगनाः कुड़ियां दिसन ते खंगना।

> मुडिंद्या दी एही कार ए, करनी कमाई द्यार ए।

टब्बर वी मेथों तंग ए पईघर विच भुजदी भंग ए

मैंनुं पता नहीं कार दा, दुनियां दे कारो बार दा। भिरदा मैं बुल्ले लुट दा, थां २ ते पैसा पुट दा। पिछले समय कुफ होर सी मुंडे बड़े शाह ज़ोर सी

> है सन धनी तलवार दे, स्रो बड़े बल कार दे। छिंजां ते गतके बाज़ियां, नेज़े ते तीर श्रंदाजिश्रां।

खेडां अजइयां जानदे मालिक सी हिन्दुस्तान दे

> हुन काग्ती भलवान जे, एहो जए बलवान जे।

फैशन दी बग्गी मार जे, शीशा कंघी हथियार जे। अज कल दी मूर्त बेख लौ, ''राय" दी सुरत वेख लौ।

नवं ज़माने

नवें जमाने आए
हुनते
नवें जमाने आए
उगिद्यां स्ल्लां दे मुँह तिखे
जमदे पढ़े पढ़ाए
हुनते
नवें जमाने आए

श्रज कल दी माँ

जदो मैं पढ़दा हुंदा सां ओदों उर्दू दी पैहली किताब दा पिहला सवक एह हुंदा सी। "मां बच्चे को गोद में लिये बैठी है, बाप हुका पी रहा है बचा उँ गृठा चूस रहा है। माँ जब बच्चे को देखती है उसका दिल बाग २ हो जाता है। हुन पश्चिमी सभ्यता ने सारा रंग बदल दित्ता ए। कुड़ियां दा नां लीजो दा लिली, लाजो दा रोजी, विद्या दा डडी हो गया ए। हुन नवीं किताब दा पहला सबक इस्तरां होबेगा। माँ कुर्सी पर बैठी नावल पढ़ रही है अपनी जवान लड़की मिस लिली को सुना रही है। बाप युरोप का बना सिगार पी रहा है बच्चे को आया खिला रही है। माँ अब बच्चे को देखती है उसका दिल बाग बाग नहीं बिलके लोरेंस गार्डन हो जाता है। (88)

माँ कुर्सी ते नावलां पड़े बैठी,

पिल लिलो नुं पई सुनावदी ए।

पित्रो युरप दा असली शिगार पीवे,

आया बच्चे नुँ पई खड़ांबदी ए।

(आया दी दिली भावना)

दिलों कहे पटका के परे मारां,

उत्तों बड़े ही लाड लडांबंदी ए।

पर जी नौकरी नाल की निमे नखरा,

गल पया आ होल बजांबदी।
आखे केड़िआं कीतिआं पेश आईयां
करे कोई ते करनियां भरे कोई
भांभर किसे दी पया छणकाये कोई
जमें कोई ते पालना करे कोई

जदों मां पुत्र वल वेखदी ए, जी विच सौ सौ चा मल्हार होवन। सुरुखी लहा दहाड़ाओं कदों आवे, वाजां इंगलिश विच मारदे यार होवन वियाह बास्ते पेपर विच बांट देवे,

आये कुड़ियां दे फोटो इजार होवन। तेरे यारां दी बोर्ड विच होन फोटो,

इन्टर व्यु इक थी सौ सौ वार होवन ।

वोट देन दा यारां नुं हक होवे चुने तुं तेरा ऋखत्यार होवे सदा वाईफ नाल रहवे तुं विश्रो खिचड़ी साडे नाल न भावें प्यार होवे

त्रों त्रिंश के बुद्धियां इसदा ए.

मां कुर्सी ते तौड़ियां मारदी ए!
लारेंस गार्डन हुंदा सु जी खिड़के,
तावीं दूरों ही पई पुचकार दी ए!
लै के कैमरा फोटो उतार दी ए,
फोटो नाल त्रो हिक नुँ ठार दी ए!
कदी किस्स जे करे ते करे भावें,
नहीं ते परे ही परे पुकार दी ए।

आया नाटी ए वैबी को उधर लेजा आई फिइअर न डैम पेशाब करदे मैं नहीं ऐसे प्यार को लाईक करती कहीं साड़ी न बल्डी खराब करदे

सुता पयां जे किते तर्श्वक उठे,

थप २ के आया सुवाये वैठी। मां ममतादी मारी नुंपता नहीं न,

नहीं ते ऋखाँ विच रात लंघाए बैठी। भला ऋपने पुत्र तो कौन चंगा,

जान पुत्त तो घोल घुमाए बैठी। पर स्रो सुत्ती ए दूसरे रूम अन्दर,

आया कलपदी पई वराय बैठी।

"राय" आया वी सचा ही पिट दी ए ओदी टहल दलाली ए कोलियां दी किडी रीक दे नाल तरखान ठोके कोई मौज लैंदा औनां डोल्यां दी

कवि दी अनपढ़ बोहटी

कवारा सां मौजा बहारां दे दिन सी न लांजे ना सोचां विचारां दे दिन सी इस लावां की लह्यां ने फाया गया जे मैं नौकर किसे दा बनाआ गया जे

विश्रा दे दिहाड़े खुशी दो गुज़ारे समभन्त्रा सां ऐदां ई लंगन गे सारे

कोई साली आखे वे खट्टआ कमाया कौह सोहरे दी भी दी भोली विच पाया

श्रो कामन पईयां पौन ऊडे ते गूडे श्रो मंगन कचीचड़यां चाँदी दे चूडे

जे नई यों ते आखन घड़ा वे धनैया असां सुनया ऐं तेरी माँ उदल गईया

में नखरे हथ्या सौ सौ नखरे सां करदा मल्हारां दे विच पैर चुक २ के धर दा

पता नहीं सी पर श्रो जनानी कई ए मेरे पल्ले जेड़ी भवानी पई ए

इह पक्की है गल्ल आख दे ने सयाने या राह पया जाने यां वाह पया जाने

श्रो श्रमपढ़ ए केंहदी ए कपड़े नुं लीड़ा कमीज़ा नुं करने ते बटना नुं बीड़ा

परौना जे आवे ते जिद के लड़े ओ मैं इज़त तो डरदा हां सिर ते चढ़े ओ ते आखे वे शैरी दा मुक्के स्थापा मरन तेरे साथी तुं रह जाए कलापा

तुं गुन गुन रहें करदा सारी दहाड़ी सड़न ए कितावां सने चन्द वाड़ी

में रो रो के सारी जवानी गवाई वे तुं वैरिया जी ते मूलों न लाई

कदी साहब बनयां तुं शिमले तुं जावें कदी मियां चन्तु तुं बूध्था भवांवे

इह चिट्ठियां वाला भाई मर क्यों तुं जावे न रहे श्रौन जोगा न चिट्ठी लिखा वे

जे मैं पेक्के जावां ते हुन्दा ई साड़ा तुं श्रोथे ते करके रवें गा उजाड़ा वे लोको मैं सच्ची अही सुहागन मेरे कोलों चंगियां ने फतो ते भागन

ग़रीबी ए पर आे सुखी वसदे ने आो रल मिल के दोवें ई जी इसदे ने

इह मुंह नाल लावे लल्लो पोचे लखां ते पल पल दे पिछों भवाँदा ए अखां

जड़ी असक अखरां दी देंदा रवे गा मेरे कोल पल भर न हस के बवे गा

भुभावका ए चन्द्ररा न हो जाए सुदाई कवारी ई चंगी सां कादी विश्राई

पति हथों सड़ बल के कोला सवानी यौ सुखां दी दाती र्ह्वगां दी रानी मैं टैगोर दा साथी चातर्र सयाना जनानी तो डर दा फिरां जी भयाना

इह अन जोड़ जोड़ी विद्या कादा होया बदो बदी ''राय" दा तोपा परोया

13 F AND THE ROLL OF THE PARTY OF THE PARTY.

श्रकूत की पुकार

मेरे वी जम्मन दिन उत्ते होय सन चाह मल्हार मेरे, बुढ़िआ ने होलर गावें सन कीते सन सगन हजार मेरे।

लाड़ा विच जिम्पयां पलयां हां मैं वी हां जीव जहान ज्या, मुद्द मथा कुल मनुखां दा चिह्न चक्कर सब इनसान ज्या।

दो वेले पाठ करेंदे जो गुरु नानक जी दी बाणी दा, जद खीना छू छू कीती ते सौ घड़ा पयासिर पानी दा।

सोचा मैं लोकां वरगा हाँ कि मेरे अन्दर जान नहीं, जे आत्मा बिच परमात्मा एँ कि मेरे बिच भगवान नहीं।

जेकर मैं गंद उठां दा हां दहतो ए पर उपकार नहीं. मालिक ते ओदे बंदिआं दा मैं पका सेवादार नहीं।

दोषी हां ऐसे नेकी दा लोकां दी सेवा करदा जे, अपने लई दुनियां मरदी नहीं मैं दुनियाँ खातिर मरदा जे।

साऊ गंद आपे पौंदा ए फिर नक चड़ौंदा थक्के न, ओसे दा धोना धोंदी ही यह जिंद नमानी अक्के न।

माँ मैला धोवे ममता दा आदे ते चरनीं हैं हदे आ, रब्ब लेखे टैहल कपावां मैं तां मेरे पीछे पैंदे आ।

मांवां दा आदर नारे दे वी प्यारो दा दम भरदे आहे. शूद्र क्यों दूप्परश्रोरे ने जिनां नु दुर २ कर देखी। हे शब्बा मैं वी जग अन्दर बंदिया दे वरगा बन्दाजे, जो कृष्ण जानदा दुनियांनु स्रो सेवक नाई नन्दा जे।

इह लोक राम दे भक्त नहीं पर मैं शिविरी दा जाया जे, ए राम नाम नुं बड़ा जे में सच्चा धर्म निभाया जे।

श्रो जन्मदे ब्रह्मन २ ने शूद्र ने भावें कर्मा दे, "राय" रवी दास चुमार रिहा जए संगल पक्के भरमां दे।

पहाड़न

पुछित्र्या इक पहाड़न कोलों राह किधर नुं जांदा ई अरुख मेल उस नीवीं पाई, वीन निवा मुस्काके बोली— राह जाखू नुं जांदा ई

लङ्ग गई गल आख पहाड़न खिच कलेजे पाई वैरन वेंहदा रह गया खड़ा खलोता श्रोने भी के मूल न डिठा रह रह के पया चेता आवे

ओदा धौन निवौना आे

निवीं पा मुस्कौना ओ

गोरे २ मुखड़े बिचों—कुलियां कुलियां बुद्धियां बिचों

पोली जई फरमोना ओ

राह जाखू नुं जांदा ई

बे बस्सा सां की करदा मैं

करदा ते की कर सकदा सां—ठएडे हौके भर सकदा सां

मोटे नैन हरनोटआं वरगे—नीवीं नजरे फेर फेर के

अपने दिल दा मेरे दिल ते
पा परछावां पतरा हो गई
भोली भाली ध्रत ओदी
मुहीं फुल केरदी दिस्से-एही बोल बोल दी दिस्से
राह जाख नुं जांदा ई

फेर मिली मैं फेर पछिया हुन त्रो मेरी रमज जान के भोले मा एह गल आख गई

की राहियां नाल प्रेम लगौना—की अपने गल फाईयां पौना एह शिमले दिआं ठिएडआं २ — दुखे होनां मान हवावां लख्खां ई पंखेरु एथे — दुल २ पेंदे रूप जोवन ते रस्ता पुछ २ दुर गये सारे खन्ररोटे तुनीं जा राहिया—राह पुछनांए दस्स देनीआं श्रो जाख नुं जांदा ई

उँज मैं सब कुछ जाना बुमां
चार दिनां दी दुनियां सारी-मुड़ नई मिलने रूप पुजारी
डिठा नई पर सुनयां है जे-ए लोकी नई तोड़ निमौंदे
रूप जवानी मान परौने-सुपने विच न नज़री औदि
ऐसे करके सोच रही हां
बेफैदा ने बादू गल्लां-प्रेम नदी विच पै २ छल्लां
सौन मुक्के मुक जावन आपे

मैं क्युं पन नुं चिन्ता लावां -मैं क्युं रोग गले विच पावां जिस दी जान पछान न कोई- खोनुं दिल जई चीज फड़ावां

> चुप करीता हुर जा वारी बनी रवे तेरी सरदारी राह दहसांगी सौ २ वारी आे जाखू नु' जांदा ई

शिमला कामदेव दी घाटी—कोई न कर्मन जाऊं अफाथी जेड़ी तेरा दा न जाने—प्रेम प्यार दा भा न जाने ओनं मिद्धा जहर खवा के—रोग इएक दा पण्ले पा के निर्छल नुं इक छिलिया मिल के वल छल के चड़ जाऊ रेले —कर्मा दे नाल होसन मेले ओ जाखू दी टीसी बैह के राह तकेंगी प्रेम पुजारन तेनुं चित न चेता होना—ऐसे गल दा मैंनुं रोना नहीं ते मैं वी प्रेम पुजारिन प्रेम प्यार दीआं सारां जाना तेरी मूर्त जांदे राहिया—मेरे बदो बदी दिआ माहिया

श्रपने मन दे मन्दिर अन्दर निश्चय कर अस्थापन कर दी पर तुँ छड़ दे खेड़ा मेरा श्रो 'जसबन्ता" रस्ता तेरा राह जाख नुं जांदा ई

नूरजहाँ

हुन क्यों नहीं पासा परत दा — मालिक खो हिंदुस्तान दे, हुन सार क्यों लैंदा नहीं — आशिक खो नुरजहाँन दे —

जद तक रहा सजीम तुं —िदिता सी दिल दा राज वी जद हो गयों जहाँगीर ते —दे दिता तखतीत।ज वी

जिस दे बलौरी जिस्म चों—िडिटा खुदा दा नूर तुं नैनां दी मस्ती लोर तक—प्यारां लई मज़बूर तुं

जिसदी जुल्फ दे हनेर विच-मन मानीत्रां करदा रिहों जिस दे हुस्न दे चानने — जीवन दा राह भालदा गियों हाय नजर उस नुंखा गई—भम्बट सें तुं जिस नूर दा खोले दे विच कल्ली पई—आशिक सें तुं जिस हूर दा

एह नृर दा एह हुस्न दा—हाय आखिरी अनजाम ऐं ज्ञो ते खुदा दा नृर सी—जो कह गई अल्हाम ऐं

मेरे जईआं बी कबर ते-दीवा नहीं कोई फुल नहीं भम्बट कोई सड़दा नहीं-कोई बोल दी बुलबुल नहीं

बागड्यानी

श्रात्मकली दे चौंक विच इक बागड़यानी ने मिट्टी दी टोकरी सिर ते चुक्की होई ए । श्रोदे कोलों दी कालिज दीयां कुड़ईयां कांगईयां ने, बागड़यानी ने कुड़ियां नुं घूर के वेखश्रा ते अपनी किस्मत कुड़ियां दी । श्रहमोई जवानी ते बड़ा हिर्फ कीता । कि श्रोदी गरीबी ते जवानी दा नकशा बन्नयां।

त्रो बागड्यानी हाए बागड्यानी

त्रोदा चढ़दा जोबन श्रोदी अख्ख मस्तानी गुरबत ने घेरी श्रोदी छैल जवानी लीरां विच घोगे त्रोदे गल दी गान्नी किते घा पया खोते त्रोदे दिल दा जान्नी

मैहला दी नारी आदर्श सवानी किरमत दी मारी होई बागड़यानी खो बागड़यानी

रजपूत दी बेटी मेवाड़ दी रानी श्रोदी कोमल काया श्रोदी मिट्टी वाणी

श्रोदी बांही गज़रे श्रोदी सोहल कलाई मेवाड़ दी सिंहनी श्रो दुर्गा वाई

त्रोने धर्म दी खातिर जद तेग संम्भाली देह बज़र हो गई लाडां नाल पाली

पापी नुं साड़े ओदे रुप दी लाली ओने ड़ांज्हां लाईयां जई रख्ख बखाली ओने आन दी खातिर जद तेश चलाई ओने कोध दी अधि लहु नाल बुजाई

स्रो चिंगडका बन के फिर गई मैदाने स्रोदे वारों बचया कोई राम ही जाने

त्रोदे धर्म दी इ।लों शस्त्र छनकारों त्रोदी तेग दी लिशकों तलवार दी धारों

इक विजली बन के निकली चत्रानी स्रो बागड़वानी हाए बागड़वानी

चित्तौड़ दा ज़ोबन खोदी शान निराली खो पदमनी देवी सच्चे विच ड़ाली

जुलफां दे कुएडल ज्युं फनियर काले स्रो हुस्त दे राखेरव स्राप विठाले मृग नैनी नाजो त्रोदी कंवन काया त्रोने साड़ गवाई नहीं दारा लवाया

त्रोने त्रान दी खातिर जद देही बाली लम्भूयां विच लिशके सत धर्म दी लाली

त्रोदे सड़दे दिल दी अन्तिम चरणाटों स्रोदी बलदी चिता चों लम्भू आंदी लाटो

इक जग्गदी ज्वाला निकली देवश्रानी श्रो बागड़श्रानी हाए बागड़यानी

सिर लीर पुरानी या लैंगा अंगी सत धर्म सती दा जीवन दा संगी

रज़पूती रंगन विच ऐसी रंगी स्रोने मिट्टी डोही नहीं भिछया मंगी

श्रोने श्रौरत होके नहीं सोज विखाया श्रोने मांग नहीं कड्डी सन्द्र नहीं लाया श्रोने सांस्भ के रवखया जोवन हत्यारा सिर विन्नु धरया इजत दा सहारा

रुल के नहीं छड़ी श्रोने श्रान पुरानी श्रो बागड़यानी हाए बागड़यानी

खोथों दी लंगियां कालिज दीयां कुड़ियां रङ्ग पीले भुका मुंह हड़वां वडियां

रङ्ग रूप जवानी कर गये किनारा पौडर ते सुरखी जोबन दा सहारा

स्रोना विच जा के एऊं बड़की खंगी ज्युँ गिदड़ां विचों कोई सिंहनी लंगी

भारत दी देवी हो गई अहमोई विन हार शिंगारों हुन कम न कोई हाय किस्मत मेरा कुड़ियां दी जवानी क्युँ हर गई रब्बा कहे बागड़याती

चम्पा तों सिखया जिसने मर जाना रोटी न लभे वा कुट २ खाना

गोल्ले नहीं बननां जिंद जान गवौनी भारत दी इज्जत नहीं लीक लवौनी

त्रोतुं की आखन एह फ्रंदे फीते जिस देश धर्म लई सिर देने कीते

भारत दी असली देवी देवआनी गई शान शहाना होई बागड़यानी स्रो बागड़यानी हाय बागड़यानी

गरीव ग्रते वसन्त

होया जंगल च मंगल जहान आखे.

थां २ ते लावे दरबार सोहनी ।

1 1

इह बसन्त ने होलियां खेड़ियां ने,

पीले रंग दी दिस्से बहार सोहनी।

छत्तर सोने दा सरों दे सीस उत्ते,

बरदी जाप दी ए तिल्ले दार सोहनी।

पीले जोड़े पतांम्बरी साड़ियां ने,

खड़ी दिस्से हज़ार मटब्रार सोहनी ।

फुल्ले फिरो बसन्त दी खुशी अन्दर,

हालत पता नहीं अपनी अन्ज की ए।

जिनां हथ्थी आजादी नुं तोर दिता,

भला श्रोदी बसन्त दा हज्ज की ए।

पयां रीमनां कुदरत दी कार वल्ली,

रंगत वेख के पीले नज़ारयां दी।

भुल जाई न योपरी शान उत्ते,

फबत वेख के बांके दुलारयां दी।

इह पल्लतनां रंग बसन्त दा नहीं,

लिम्ब पोच है ओपरी सारयां दी।

कदी साडी बसन्त बसन्त हैसी,

हुन बसन्त की गमां दे मारयां दी।

राय पीलयां रंगा तो पता लगें लहू साडया नित दे साडया ने उठन जोगे न फिटे मुँह गोडयाँ दा की बसन्त मनौनी ए माडयाँ ने

परदेश दी दुनिया

इक परदेशों आये सज्जन नुं पुछिया ए परदेश दी दुनियां साडे देश वरगी ए ते पञ्जाब दे चार नजारे दस्से ने।

परदेश दी दुनियां कैसी ए ?

परदेश तों आये सज्जनां ओ-परदेश दी दुनियां कैसी ए ? दस्स की परदेश दा वासा ए-ओथों दा की बरतारा ए ? की रैनी सैनी ओथों दी-ओथे किस्तरां गुज़ारा ए ?

की नूर पीर दे तड़के तों-बलदां दीआं टल्लियां सुनिआं सी ? घुमक महानी छनक चूड़े दी-सरां दुवल्लीयां सुनिआं सी ? मिक्स्यां नुं चुंगदे डांगां जए-गबरू वी बुक दे वेखे सी ? सिर चीरे मुच्छां वट २ के - मुग़दर वी चुकदे वेखे सी ?

मेले विच भंगड़े पैंदे सी-छिज्जां विच घोल जवानां दे ? चंजली ते दौड़े सद्दां दे —की सुने सी बोल अखानां दे ?

परदेश दी दुनियां ऐसी ए: -

की सौन पहीने खोथे वी-बदलां ने काइयां लाईयां सी ? अम्बां दे हेठां वागां विच-कुड़ियां ने पींघां पाईयां सी !

किसे सोहल मल्कड़ अल्हड़ ने-जिद जिद के पींघ चढ़ाई ए? मोड़े ते चुन्नी उडदी सी —ज्युं परी उडारी लाई ए?

गुत्त उड़दी काले सप वांग-लोहडा सी नवीं जवानी दा ? कुड़ियां दी सारी ड़ानी विच-चरचा सी उस मर जानी दा ?

1

M.

yi.

NI T

चूड़े सी लाल ब्याईयां दे—सादा सी रूप क्वारी दा ? कोई त्योहार उडीके सावें दा-राह वेखे प्रेम पुजारी दा ?

श्रोथे वी सांवें हुंदे ने — श्रोथों दी दुनियां कैसी ए? परदेश दी दुनियां कैसी ए?

चरखे दी घुं घुं सुनदी ए—श्रोधे वी त्रिंजन पैदें ने ? की रांभन चाक मुहब्बतां दे—त्रिंजनां दे सदके लैदें ने ?

साथी ने जींदे मोयां दे—भौरे ने प्रेम प्यारां दे ? चरचे ने सदके बलियां दे —ससी ते सोहनियां नारां दे ?

खोथे वी सिदकी बन्दे ने —की असल प्यारे मिलदे ने ? यां निरा मौज ही मेला ए — प्रेमी वी उदारे मिलदे ने ?

त्रोथे वी इशक मजाजी चों−िक इशक हकीकी मिलदा ए ? कि सिर दियां साई यां दें देने — जद सौदा हुन्दा दिलदा ए ?

> त्रोथों दी दुनियां ऐसी ए --परदेश दी दुनियां वैसी ए ?

की ऋतु बसन्त दी ओंदी ए-फगन विच होली हुंदी ए र लाड़ां विच दच्चोर ते भाबी दी-की ऋख मचोली हुंदी ए र

रंग पांदे इसदे भाबी दी-जद गिल्ली चोली हुन्दी ए ? तद बोल बुलारा हुन्दा ए -- तद ताने बोली हुन्दी ए ?

वस मेरे नाल न बोलीं वे — दहसदी हां तेरे वीर तुं ? मैं दहसनां अपने वीरे तुं — तुं जा दहस मेरे वीरे तुं ?

मेरा ते बीरा लगदा ए—तेरा की भाबी लगदा ए ? खबरे की मेरा लगदा ए—पर मालिक मेरे जगदा ए !

दोवां दा मुन्सफ इको है—दोवां नुं मान है ओसे ते ? भावी दा आखा मन्नन गे—िक इकन गे वीर दे रोसे ते ?

डर अपना २ दोवां नुं — इह सोच के खिड़ २ हस्सदे ने १ किर गुथम गुथ्था दोवें ही — मुन्सफ नुं मूल न दस्सदे ने १ पग लौंनी चुन्नी फाड़न दा-रंग छिडकन लाल गुलाबी दा ? इह खेड़ है भैन भरावां दी-इह हासा दन्नोर ते भाबी दा ?

श्रोथे वी होली हुन्दी ए—श्रोथों दी दुनियां कैसी ए ? परदेश दी दुनियां कैसी ?

दस्स एथे वांगन ओथे वी-की लोक गुलाम ही रैहंदे ने ? की विना गुनाहों मुजरम ने-ओथे बदनाम ही रैहंदे ने ?

खोथे वी हक्क्षत गौरां दी-या गोल्ला हिन्दुस्तान ई ए ? धर सब कुछ हुंदियां सुंदियां वी-इक लोल्ला हिंदुस्तान ई ए ?

बदनाम गुलाम ने स्रोथे बी-स्रोथों दी दुनियां ऐसी ए ? परदेश दी दुनियां केंसी ए ?

एक्का

इह कबिता श्रील इंडिया नुमाईश दे मशैहरे विच पैहली जनवरी सन् १६३८ नुं पढ़ी गई गर्वनमैंट वलो सैकिंड इनाम चाँदी दा मैडल ते सार्टीफिकेट मिलया सी ।

इह दे नाल दूसरी किवता नुमाईश दी सैर सी जेड़ी असी लिखी ए।

एको ब्रह्म ते दूसरा नास कैन्हदे,
श्राप ब्रह्मा जे ब्रह्म थीं प्यार होवे।
एकम् श्रोंकार साकार च भेद कादा,
बन्दा श्राप श्रोंकार साकार होवे।

रब्ब बन्देश्चां विच बन्दा रब्ब श्रापे, जेड़ा जान लये बली श्रवतार होवे। भेद रब्ब ते बन्दे दा खुल जांदा, जदीं एक्के ते जरा विचार होवे।

> इक्को राम मुहम्मद ते गुरु नानक जिनां रब्ब दे भेद नुं जानयां ऐं स्रोना लोकां नुं एक्के दा सबक दिता लोकां स्रोनां तो रब्ब पञ्जानस्रां ऐं

161

योग

Î

इक एक्के तों दुनियां दा आद कर के,

रब्ब अपनी कला विखाई है जे।

श्रंस अंस जे मिले ते बने बन्दा,

पंजां तक्तां दे विच खुदाई है जे।

जिनां बन्दियां दे विच होए एक्का,

बसदी ओनां विच पीरी औल्याई है जे।

विना एक्केयां दुनियां दा मुल कौड़ी,

ऐवें खिलरी होई लुकाई है जे।

जिस कौम ते मुन्क विच होये एका
पानी त्रोदा हकूमतां भरिदयां ने
एक्के वालयां कोल वसुन्न हुन्दा
ते घसुन्न तों खलकतां हरिदयां ने

राजपूत बलवानां दी बली मिट्टी, जदों गया एका खान दान विचीं। पृथ्वी राज चौहान दी जुन बदली,

बल खिचआ गया बलभान विचौं। घोगा नप्या गया चुगतयाँ दा,

एका दुदिया मुग़ल पठान विचों। सिख गुरु दे सूरमे होय हथल्ल,

बेई मान जद होत्रा ध्यान विचों।
राज ताज हक्तमतां बादशाहियां
एका लें गया ए इंगलिशस्तान अंदर
भुख नंग ते गुलामी ते बेकारी
अजज रह गईयां ने हिन्दुस्तान अन्दर

पानी अमा हवा आकाश मिट्टी,

रल के जिस्तरां इक इन्सान होवे। आवे सुन्दर सिकन्दर जनाह नारंग,

परमानन्द दी जे इको जान होवे। होवे सिख शरीर ते मन मोमन

हिन्दु श्रोस विच नैन प्राण होवे। जिवें राम हरीम करतार इको,

> इको वेद ग्रन्थ कुरान होवे। होवे छूत अछूत इक दर्जा सांवां हक जे होवे जनानियां दा सौं रञ्च दी ("राय") भूठ आखे हिन्दुस्तान होवे हिंदुस्तानियां दा

नुमाईश दी सैर

पैहली जनवरी सन् १६३८ नुँ औल इण्डिया नुमाईश दे मशैहरे विच पढ़ी गई।

शहरों कुम लैंहदे जये

बुड्ढे दरियां उत्ते

कुम कांवां रौली ए

कुम रौला रप्पा ए

हां मिन्टो पारक विच दिखलावा धरया ए

श्रोदे विच की कुम दहसन तों बारा ए

इक अजब नजारा ए इक खूब नजारा ए घुगु ने रेजा दे ईंजन ते गड़ियां ने नहरां वी कड़ियां ने विच वेड़ियां छड़ियां ने

> रेतां दे थम्मे ने टाईलां ने सीमिएट दियां

सोने दे गहने ने-रूपे दे गहने ने जो तिवियां लैने ने

> मोनां नुं मौज बनी- मरदां नुं वखत पया जो पैसे खर्चन गे-जे कर न खर्च नगे तद सैंडल खडकन गे

उँज मुड़ लड़ाई दा-पर नवां नज़ारा ए वई खूब नज़ारा ए किते इत्र लाविन्डर ने-कंवियां ते सुरमे ने श्रो टिक्का बिन्दी ए-नाले पटियाले दे यां फुल परांदे ने जो खिंचां पांदे ने

चीनी दे भांडे ने-श्रो पिर्च प्याले ने फल कारियां सालू ने-जो बुढ़ियां कड्डे ने

कुड़ियां दे हथ्थां दे रुमाल दुपट्टे ने इह देशी अकलां ने इह कारांगिरयां ने जी करदा लै लईये-पर ५से हर गये ने इंग्रेजी डैसां ने-माल ऐंटी कर लमे ने

वेले दे हाकिम ने अंगरेज़ी जुये विच कोई हिक्रमत समभी ए-भलयाई सोची ए भावें एह सब कुछ ए-पर मैला चगां ए इक अजब नजारा ए वई खुब नजारा ए

कम अजब लुहारां दे-राजां तरखानां दे

कई खड़े तमाशे ने

भंगूड़े चड़खड़ियां-सब बन सबने ने

पर साईस सहाल अन्दर

कि ठड़ा कीता ए-कि ढोंग रचाया ए

ओथे इक लोहे दा-कारटून बनाया ए

हिकमत थी लोकां नं-पये फूल बनोंदे ने
पये पैसे पौंदे ने
एह नवां तरीका ए-इक हेरा फेरी दा
पर मैला चंगा ए
इक नवां नज़ारा ए
बई खूब नज़ारा ए

डिठा की मैले विच-इन होर तबेले विच गुड़ गन्ने सिट्टे ने राईयां दे घर बांगू'-बी सारे रख्खे ने च्यो दुने दारे विच-कई शेर बगेले ने लुम्बड़ ते चित्तरे ने-हर नोटे मारे ने इह काराँ गरियां ने विच तुड़ी भर भ के-सब खल्लां महियां ने पर ऐस बखावे विच श्री सब तो खरियां ने जो तुरदियां बोलदीयां-मालिक ने कुदरत थी तसवीरां घडियां ने चंगियां ने जापदियाँ-सोहने पहनावे ने चूड़े ने लाल कई-सज़रे मकलावे ने हड्चहे सहपन दे चालां मत वालडियां एह शान दिखावे दी-एह रौनक मैले दी वाह खूब नज़ारा ए वर्ड अज़ब नज़ारा ए

एह गल अखीरी ए-एह धर्मों धक्की ए
ऐह बहुत नकारी ए
एह उर्दू शैरां दी-जिंद जान प्यारी ए
ऐदे बिन उर्दू दी-सब शैरी फिकी ए
कि चीज अनोखी ए
दारू दी हट्टी ए

मैं नुं कुज पता नहीं - एह मुफत पलौंदे ने

या पैसे लौंदे ने

पर जेड़े पींदे ने

मस्ताने हुँदे ने-दीवाने हुंदे ने

मैं ऐना आखांगा-एह काढ़ पंजाबी ए

अङ्गरेज़ी मही दी

कड़ी नहीं चाधरियां-न जट्टां कड़ी ए

मैड़ी या चंगी ए

पर एथों मिलदी ए-ऐबी कोई हिकमत ए

जो अकलों बारा ए सोहना दिखलावा ए वाह अजब नज़ारा ए वई खूब नज़ारा ए

जोगन

इक लट बौरी जोगन फिरदी

जिस दा मुख प्रकाश कर रया,
जिस दी लटक निराली।
जिस दी कोमल कंचन काया,
सच्चे दे विच ढ़ाली।

जिस दे नैना दे विच मस्ती, नवां नरोया जोबन। फिरदी इक लट बौरी जोगन जिसदीयां नागन जुलफां हाये,
कील न सकया कोई।
कई माँदरी जीवन खो गये,
मुड़ के होश न होई॥
उसदीयां जुलफां दे परछावें,
कई जवानियां सुकियां।
जिस दे नैना दे विच लखां,

जिस देन ना देविच लखी, जीत आकाशी लुकियां।।

जिस दी मिट्ठी बाणी सुन के, मन बेबस हो जावे।

> उस दे वेख हुस्न दा जलवा, दुनियां मूल न भावे।।

जिस दे मत्थे दी इक घूरी,

महल आस दा ढावे।

जिस दे बुल्लां दी मुस्कानी,

दुनियां फेर वसावे ॥

जिस दे नैनां दा भलकारा, चिनग प्रेम दी लावे। (25)

सट्ट अवल्ली खा के हाये,
होई जवानी सोगन।।
इक लट बौरी जोगन
फिरदी
इक लट बौरी जोगन

अगन लगन दी सीने लग्गी, विरहीं दे दु:ख उद्यन ।

> रोंदे नैंन बुकावन खातिर, सगों भुभाके उद्दन ॥

दिल तड़फे ते तड़फे हुन ते, इस दा नहीं कोई दारू।

> रोग प्रेम दा बहुत अवल्ला, अपने आप ते भारू॥

इस रोगदियां पिडियां पीड़ां, इस दी दर्द स्वादी।

> वेचैनी ते ठएडे होके, एह प्रेम दी वादी।।

ऐस मरन विच जीवन जाये, जिऊँदी जिन्दड़ी रीगन, फिरदी इक लट बौरी जोगन......

भरम मुलावा

इक बीबी ने कविता लिखी सी इङ्गलिश पोइटरी दा उङ्गथा करके (हे सज्जन जद में मर जासां—कोई चीख चआड़ा पाना न) श्रोदे उत्तर विच कविता लिखी ए जिस विच दस्सया है कि मरन तों बाद कोई किसे नुं याद नहीं करदा, दुनियां जियुंदी जान दी साथी है।

जद साड़ सवाह परवा दित्ती— तद गड़ी कवर ते गोर नहीं जद फुल आखिरी चुने गये— चुलबुल ने करना शोर नहीं जद बांके टेड़े चितवन नहीं— तद ओ साजन चित्त चोर नहीं जद नुर गया ढल नैना चों— तद ओ मस्ती ओ लोर नहीं जद हासे विजली पौनी नां गल्लां ने मन भरमौना नां कि लोड़ कहन दी मर जासां कोई चीक्ष चन्नाड़ा पाना नां

मोह हुंदा ए मुँह डिठे दा—मोयां नुं केड़ा भुल्ले नां श्रो हीरां रांके लम्भन न —जुह बेले हुन कोई रुल्ले नां मोथे कद आके वेंहदे ने—अख मोटी मुड़ के खुल्ले नां ए चार दिनां दा जोवन ने—कोई जोवन उत्ते फुल्ले नां

लोड़ा ने जियुंदी जान दीआं किसे वारी सद के जाना नां दिल टोंहदे ओ ए कैह २ के कोई चीख चआड़ा पाना नां

कि प्रेम प्यार मुहब्बत ए—जद कोल सजन दे बहना नां किस दिल दी छेज विछौनी एँ —जद बोल अमुद्धा केहना नां श्रो तील्ली किवें बल जासी —जिस नाल मसाले केहना नां कि याद किसे ने करना एँ —जद खुरा खोज ते रैहना नां कि तेरी मेरी वटक ए वचया कोई राजा रानां नां दुनियां दा भरम भ्रतावा ए कोई चीख चत्राड़ा पाना नां

जद शमां मंजिल सी गुल होई—परवाना जान गुवाऊ कियुँ श्रम्बा दी लंग वहार गई—तद कीयल राग सुनाऊ कियुँ फुलां चों जोवन लद गया—तद भौरा रौला पाऊ कियुँ जद नागन जुलफां न रहीयां—मन जोगी बीन बजाऊ कियुँ

> मरदे होये पिक्कयां करदे आ कैह के कुज दिल ते लाना नां ''जसवन्त''ऐस विच भेद कोई नहीं कोई चीख चआड़ा पाना नां

रोरै पंजाब महाराजा रगाजीतासिंहजी

इह कविता महाराजा रणजीत सिंह जी दी सौ साला वरसी दे कवि दरबार विच पढ़ी गई।

मोया खसम सिर तों प्रजा होई नंगी.

अक्खां मेलियां बदां खचरोटआं ने । पानी लोभ दा पापी दी जीभ भरया,

मुँह टड़े वे पैंदया लोटआं ने । नूर शेर दी अवस दा ढलदियां ई',

श्रन्नी पाई सी विडयां छोटयां ने। दीवे बट्टी दे हुंदियाँ हुदियाँ ई,

दीवे गुल कर दिते डगरोटआं ने।

रैहना राज अहल सी खालसे दा कैहर किता बदनीतां खोटआं ने सिर तों साई' ते खसम दे मरदियां ई' पाईयां बड़ियाँ छोटआं मोटआं ने

नीस्रत बदल गई मीसने मिन्नयां दी, शर्म नहीं आई उखल पुट्टयां नुं। बांह फड़ी दी रक्खी सी लाज चङ्गी, लोक लज नहीं नीस्रत दे दुट्टयां नुं।

कछ विचों करूँडिए वड़ खादा, सारा देश रोया कर्मा फुट्टयां नुं। लंडी बुच्ची वी मुच्छां नुं ता दित्ते,

वेख सैकदे समय दे कुट्टयां नुं।

वैर पयां घंदोले वी फूक दिते अन्ने अकल दे नौह २ खोइयां नें हौला कख तो देश पजाब कीता पापा बेड़ियां छोटयां मोइयां ने तेरे वीरां ने देश दी आन बदले,

सिर ते अल्लियां औकड़ां आरियां ने ।

सदा लड़दे ने नंगयां घडां उत्ते,

वीरां खून अन्दर लोशां तारियां ने ।

तेरी अंश दे इके सिर ताज बाजों,

असां जित के बाजियां हारियां ने ।

अज हुंदी सरकार ते मुल पँदा,
जेडियां योद्धयां ने तेगां मारियां ने ।

तेरे पीले सिंहासन ते सजनां सी शेरा तेरे ही जिगर दे टोटयां ने शाम लाट पर बेख के राज तेरा पाईयां वंडियां छोटयां मोटयां ने

वीरां कदी वी आन नुं छड़ियां नहीं,
बड़के सदा ही फाँसी दे फट्टयां ते।
हु'दे ओस दे मुँह दमुँह जीदे,
हु'दे रुख वी हरे न चट्टयां ते।

जे नखसमें न हुंदे ते वैरियां नुं, फड़ २ धौनां तों रगड़दे वहुयां ते। घर दे मेदी ने लंका उजाड़ दित्ती,

> गुरुसा आवे ध्यान जये घट्टयां ते। तरल्से करने सी साड़ा जे राज हुंदा हिटलर जये कुलाटिये चोट्टयां ने 'राय' फुट ने कड़ी ही घोल दिती पाईयां बंडियां छोटयां मोटयां ने

महाराजा खड़क सिंह नौनिहाल सिंह दी मौत

कृतधना धरोईयां ने कैहर कीता,

जिनां पिता ते पुत्र नखेड़ दिते।
ऐसी दोशं दे दिलां दी तार मोड़ी,

राग वैर विरोध दे छेड़ दिते।
टिंड़ा ढोल चुबकल्ली टुटदे नां,

जदों खुँह नुं पुठडे गेड़ दिते।

मुशकां भरम दे रस्सयां नाल किंदयां, दोवें मौत दे वैहन विच रेड़ दित्ते। वखो वख शरीर ते जान इक्को उच्ची वंश दे उच्चे निशान दोवें पिश्रो पुत्त च पापियां पाड पाये जेड़े सिखां दे राज दी जान दोवें

पिद्यो विलक्या जिगर दे टोटया श्रीए,

तेरा फेर वी कदी दीदार होवे। हथ्थी दे दे गरांईयाँ मैं पालया सी,

इक बार ते फेर प्यार होवे।

कि मैं पुत्र धरोही हाँ ? भूठ बीबा,

मेरा तैनूं जे कदी इतबार होवे।

छाती लाके रजके रो लवां मैं,

तेरा दर्श मैं नुं इक बार होवे ।

तेरे वास्ते सुकदा रिहां साहीं अज तरसदा तेरे परछावेंआं नुं पया मौत दी मंजी ते तड़फदा हां पुत्त मन्न जा मेरियां हाँवयां नुं पुत्त आया ते पिता ने जान दित्ती,

त्रोधर डोगरा कैहर कमांगया होर।

लोकी रोन ते करन सस्सकार सारे,

पापी बन्न नुं नवां गया होर ।

महाराज नुं ने परे चाढ़ के ते,

श्रोधर नवां ही चन्द चड़ा गया होर ।

अजे पहिला खिलार ही मुकाया नहीं,

त्रोते लहु दे नौन नवाइ गया होर।

नौ निहाल नुं ताज पवौन बदले कंद किले दी खोस ते ढाह दिती जेड़े सीस ते ताज सुहावना सी खोस सीस दी खलख सुका दिती

चन्दकौर ने सुनिद्यां ढाह मारी, मेरे लई हनेर की पा गया नी। नाले सिरों सुहाग दा गया साईं, होनी ढिड़ दा जाया वरता गया नी। नृह हथ्थां ते मेहंदियाँ फिरे लौंदी,

रंग मेहदी दा हि सके चढ़ा गया नी। हाय तखतां दे वाली नुंकी होया,

मैं नुं तती नुं होर वी ता गया नी।

दौड़ी किले नुं पुत्त दा मुख वेखन बुहा किले दा अन्दरों वन्द होया चन्द जया न मुख नसीव होया ओते ईद अन होनी दा चंद होया

मोथे शेरे पंजाब दे पुत पोते,

सिर ते देवते हंजु वहान लग्गे। लोकी मन्दरीं सुखनां सुख दे सी,

मन्दर छड़ मसानां नुं जान लग्गे। सोहले गौन दी थां ते वैन पाये,

तखत छड़ के चिता बनान लग्गे। श्रजे पिता दी ाचता न कोई ठएडी,

लम्बू पुत्र दी लोथ नुं लान लगो।

(१११)

सर्य लहू दे अथरु केर डुब्बा नृह सस दे सिरों सुहाग डुब्बा 'राय'पलक विच खा गया राज पन्टा सिख कौम दे मथत्रों भाग डुब्बा

हर मन्दिर

श्री अमृतमर जी दा दरबार साहिब

हर मन्दिर दीओं क्या बातां ने

घएटा घर ते बाबे टल दे

शानदार ने उच्च मीनारे,

राही दूरों वेख पुकारे ।

श्रो नगरी सत गुरु प्यारे दी,

घट घट दे जानन हारे दी ।

मन बिच उठन प्रेम तरंगां,

जी विच भरिया दर्श उमंगां ।

राह विच भुल बखशौंदे औंदे, सतगुरु दा गुण गौंदे औंदे।

सत गुरु दे घर सब दाता ने हर मन्दिर दीआं क्यां बातां ने

नंगे रीं गल विच पल्ले,
साथां वाले कल्लमकल्ले ।
खचरे भोले अल्ल वलल्ले
एथे सब इको हो जांदे

राजे विच अभिमान न रेंहदा,
धिनयां दे विच मान न रेंहदा।
पंडित भंगी धनी भिखारी,
सारे ने सत्त गुरु नुं प्यारे।
हर मन्दिर विच हर इक जी दी

हृदय अन्दर शुद्धि होवे, पाप मैल इक पल विच घोवे।

सत् गुरु दे हर मन्दिर आके, सत गुरु दे चरणां विच देह के। जेड़ा अपना आप गवावे, वरण धृड़ मस्तिक ते लावे। शौह दे दर ते शौह नुं पावे मेत नहीं है ऊँच नीच दा। इको जईयां सब जातां ने। हर मन्दिर दीयां क्या बातां ने । श्रमृतसर दी कंबल नाभ विच हर मन्दिर दी सुन्दरताई। जिसदी महिमा इन्द्र नारद पीर पैगम्बर बलि श्रीलिये, ऋषि मुनि साधां ने गाई। त्रमृत दे ऊपर हर मन्दिर हर मन्दिर अमृत दे अन्दर दुनियां विच मुक्ति दा मन्दिर, दुनियां विच मुक्ति दा सागर। कलु काल विच तीर्थ भारा, इस विन नाहीं पार उतारा । करनी दा कोई मेच न बना, काग नौइन हंस हो जांदे।

दु:ख भंजनी बेरी दे हेठां पापी कुष्टी जूले कोड़े, देही नवी नरोई पाँदे । रामदास गुरु जीवन दाता, मेट देवे जो लिखे विदाता । पर नीत्र्यत नाल मिलन मुरादाँ स्रोदे घर विच थोड़ नहीं जे, प्रेमी नुँ कोई मोड़ नहीं जे । त्रो भुखा है प्रेम प्यार दा भक्तां दा स्रो बहुत प्यारा, निछलिये दा श्रत हितकारा । भक्त प्रेमी जेहड़ा जावे, खाली भोली भर के आवे । पुत्रीं फले ते दुधी नाहवे मुंहों मंगियां सौगातां ने हर मन्दिर दीत्रां क्या बातां ने वेखो उचा तखत अकाली, जिथे जंगी चोला पाके।

गुरु नानक दी छेंबीं शक्ति, मीरी पीरी दे गुर वाली । सज्जे नवीं कचहरी लाके मुंहों बोले गज गजा के मिक्त दे नाल स्रमताई, अञ्ज तों सिखां दे विच आई । इह अकाल तखत है मेरा, रब्बी जोत दा समभो डेरा । एथों हुकम इलाही मिलना, इस हुकमों सिंघां नहीं टलनां । जित चुमेगी चरण तुहाडे ईन मन्नेगी दुनियां सारी, रोब मन्नेगी दुनियां सारी । खवार होन के आकी बन्दे, श्राकड खां श्रभिमानी बन्दे । सिंघ सूरमे हुन तक तांइयों ऐस हुकम ते चुं नहीं करदे, देश कौम लई लड़ २ मरदे। एथों हुकम इलाही लैंके

कई मोर्चे सिंघां मारे,

डट गये शेर बहादुर सारै।

जग दे अन्दर धुम्मां पाईयां,

जगदे अन्दर तेगां वाईयां।

शक्ति ओस पित्रत्र थां दी,

सत गुरु दे अन्नमुल्ले नां दी।

होर वेअंत करामातां ने

हर मन्दिर दीआं क्या बातां ने

the franchist on the land to be the

जङ्ग

पोह माघ दी रात दे विच जहा,

नींदां की तियां नहीं प्यारियां तुं।

खलकत घूक घुराड़े पई मार दी ए,

रातां जंगलां विच गुजारियां तुं।

ठहाँ ठहाँ रजाईयां च करण लोकी,

बहां पानी दे विच वी मारियां तुं।

इबही रात नुं जोतरे लौन जावें,

जोगां जोह के करे तयारियां तुं।

ऐड़ी धर्म दी खट्टी ते रोड़ देवें

जट्टा तिड़के भंग दे भाड़यां विच

न कोई वर्णज व्यापार न धर्म खाता फस जाना एँ वाद् पुवाड़यां विच

तेरी खट्टी ते पत्ने जहान सारा,

तुहीं तरसदा पयां ए रोटी आ तुं। लोकी शाल दुशाले ते सिलक पौंदे,

सदा गंडदा रहे लंगोटिश्रां नुं । फसल पकदी वेख के पैलियां विच,

शाहुकार आ तोड़दा बोटियां तुं। इक सखी बलांमतां लक्ख पिछे

पै गईयां ने किस्मतां खोटियां तुं।
तावीं कर्ज न लवें न लड़ें जे कर
कोई जग अन्दर तेरे नालदा नहीं
बड़े वैरी तीं वैरी नुं सज्जना श्रोए
विना जट्ट दे रब्ब वी पालदा नहीं

इक लड़े ते भुग्गा उजाड़ देवें, दूजे मारया ए कर्ज दारियां ने । तीजे वित्त तों वद के छाल मारें,

दस्स कादियां एड़ लाचारियां ने।
इध्यी देके दन्दां दे नाल खोलें,

रह जांदियां किथे सरदारियां ने।

पैसा पुटना रसमां नकारियां ने,

दो दिनां नुं पोल जो खुल जाना श्रोस गल ते श्राकड़ां साड़िये कियुँ बोदी श्रपनी किसे दे हथ दे के सुग्गा श्रपना श्राप उजाड़िये कियुं

कादे सगन बद सगनियाँ भारियां ने ।

साऊचा लंग के शाह दी लत हेठो,

कुड़मां विच चौधरमां विखालयां तुं।
दो घड़ी दी खुशी ते उमर सारी,

गल दुःख दे रोग चुंपा लया तुं।
दारू पानी दे वांगरां रोड़ के ते,

कि होया जे बोक चुला लया तुं।

स्त वेच सनुकड़ा खरीदया ई.

घट्टे कौड़ियां पैसा रुला लया तुं। तेरी चमक न चमिकयां रैन देनी सुख देना एं बाग फलकारियां ने तिड़ां मारनें मुच्छां नु ता देके तैनुं मारया ए राहां चारियां ने

जेड़ी नार दलीज़ों न पर कड़े,

पत्त श्रोस दी श्राप महाराज रक्खे । राजा राजनीति उत्ते चलदा जो,

कायम त्रापना सदा त्रो राज रक्खे। बन्दा रक्ख के पैर न पिछां परते,

करे कम जो मुच्छ दी लाज रक्खे। जट्ट अरो जो शाहन पेश पावे,

> सिद्ध पदरा कम ते काज रक्खे । जड़ दाता अंडारी है करण वांगूं तेरे विच क्रो शक्तियां सारियां ने पर तुं गलां अनहोनियां करें 'राय' तैंनू' मारयां ए राष्टां चारियां ने

जो करदा ए सो भरदा ए

दुनियां है अदले दा बदला। इथ्थी दित्ता सब ने लैना,

सव ने ऋपनी कबरे पैना। जो करनी एं सो मरनी एं,

एह मस्ला इक भक्ति दा ए। सच्चा मार्ग मुक्ति दा ए.

जिस दे दिल विच घर कर जावे।

स्रो हटदा ए पाप कमौनों — स्रो हट दा कंगाल सतानों ! निर्धन अते गरीब भरां दा — दुखियारां दा विधवावां दा ! श्री सच्चा सेवक बन जावे,

श्रो दुखियां दा दर्द वंडावे।

ठा मनके ते मनका मारें मुंहों राम विचारन नालों गल्लीं जून सवारन नालों

हथ्थी कर्म कमाना चंगा,

तर्स किसे ते खाना चंगा।

अपनी कीती दा फल पाईए,

आप न मरिये स्वर्ग न जाईए।

किसे लई जो कहु टोए,

उस विच डिग के आपे मोए।

हड्डियां रगड़े सा विरोले,

हथ्थी दे के दंदी खोले कीती दे दु:खड़े जरदा ए जो करदा ए सो मरदा ए

(१२४)

दान्नें ए गल्ल आख गये ने।
जैकर करिये तानीं डरिये,
न करिये ते तानीं डरिये।
बाजे बाजे पर संसारी,
आकड़ बाज बड़े हंकारी
रब्ब श्रोनां दा बखरा ख़बरे
श्रोनां दी दुनियां है न्यारी

वुरा भला जो जी विच आदे। कर गुजरन ओ टलदे नाहीं,

> श्रो करदे वी डरदे नाहीं। श्रंत भले दा भला ईलो को, श्रन्त बुरे दा बुरा है लोको करयुग है ए कलियुग नाहीं श्रक्षीं डिठा इस जग माहीं

पापां दा फल ऐस जहाने, बन्दा पावे जियुंदी जान्ने। हध्यीं दे के हध्यीं लैना,

कादे लई भरमां विच पैना दुनियां दी भलआई बदले कर्म कमां लै जो सरदा ए जो करदा ए सो भरदा ए

दुनियां दे विच सब तों चंगे।

मौजी ठाकुर बोतल वाले,

सब नुंदेंदे मस्तक प्याने।

सब नुं कर देंदे मतवाले,

भुल जांदे ने दुनियां सारी ।

आपे दे विच समसन श्रन्ला,

कुल खुदाई आपे कल्ला।

अनहल हक दा नारां लावे,

दुई भाव नुं दिलों गवावे।

मैं चौंहदां हां दुनियां अन्दर,

मस्त रवां मैं जद तक जीवां।

हरदम प्रेम प्याले पीवां मरदे तिकर होश न आवे

न मैं करां न करनी भोगां,

मुक जावन मस्ती विच चोगां। ''राय'' उसनुं दोश न कोई

मस्ती दे विच जो मरदा ए,

न करदा एन भरदा ए। दुनियां है अदले दा बदला जो करदा एसो भरदा ए

(बिरहों) बिछोड़ा

मैंनु अनजान विदोशी नुं
सुखां विच सुखिया रेंहदी नुं
भरमां विच वारी पा गए आ,
इक चिनग कलेजे ला गये ओ।
मैं हौके लै २ हृदय विच,
विरहां दे भांम्बड़ बाल रही।
धुखदा ए ऐस धुखेबें विच
न बल दा ए ना बुजदा ए
न दिस दा ए न सुजदा ए

(१२=)

मन जोगी प्रेम दश्रोते नुं जा २ के पया मनौंदा ए न प्रीतम तरले मन्नदा ए न जोगी मुड़ के श्रौंदा ए दिल दे के दिल नुं लैन गई सौदे विच घाटा पा बैठी मैं श्रपना श्राप गवा बैठी मैं रोग श्रनोखा ला बैठी

इक वार ते कहें होईये वे जे तेरे नहीं ते मेरे ही जे भाग किसे दे चंगे नहीं सिर सदका कर्मी वाले दा किते इकल बांजे बहये वे कुछ दिल दे वेदन कहिये वे सौदे ने धर्मी इमानां दे संयोग ने जुग जहाना दे मैं की दसां कुछ वस नहीं (358)

सिर जुड़दे वेख़ प्रेम भरे

एह दुनिया देंदी यश नहीं

कोई नवीं वयौंत बना "राय"

मैंनु रूठडा आप मना जाये

THE RESERVE OF THE PARTY OF THE PARTY.

(रात)

मूर्य ने आके पैहलों ते मुख दायक रात लताडी ए गुरुसे विच लाल अंगआरे ने खुडां विच फड के ताडी ए

धाती दी मिट्टी बालीए कईयां दी होंद मिटाई ए पानी नुं पतला पानी तों कीता ते बदली छाई ए

दुनियां विच जोर विखा लैना आकड़ फुंकारा सौखा ए हथ जोड़ नियुं के रैहना ते इक समय संमालन औखा ए वेले ने सूर्य दश्रोते दी सब आकड़ शाकड़ ढ़ाह दित्ती ढल दे परछावें दस्से ने हैंकड़ दी माया लाह दित्ती

एह सावा पीला होया ए डरदा जियुं चोर सिपाहियां तों हुन हौली २ दुरदा ए दुनियां दे बाकी राहियां तों

पंडित ने संख बजा दिता मुल्लां ने बांग सुना दित्ती सूर्य दश्रोते दे डुबन दी जी जी नुं खबर पुचा दित्ती

तद रात सुखां दी रानी ने जांदे तो अक्ख बचाई ए कालक वैरी दे मुँह उत्ते भर भर के बुकां पाई ए

हुन राज रात -दी रानी दा खोने वी हुकम चलाया ए

दित्ती ए छुट्टी नारां चुं उस हार शिंगार लगावन दी फर जुम्मे वारी चुकी ए सबनां दे पिया मिलावन दी बस दुटी खुस्सी इक अही कोई मेरे जई विचारी ए नहीं ते हर नारी साखु विच सहरां दी भरी पटारी ए

त्रीतम दे साथी चन्द पिया शीतलता आन खिलारी ए सहरां दियां विछियां छेजां ते लक्खां मन चाँदी बारी ए

रुखां दी सां सां प्रेमी लई इक गीत प्रीत दा गौंदी ए दु:खां दी मारी विहरन नुं एह जीग वेहाग सुनौंदी ए

थक्यां दुटयां मजदूरां ने राती लक्ख शुक्कर मनाया ए सुत्ते सिर हेठां बांह दे के दुनियां दा फिकर मिटाया ए

शाहां दे वारे महिल कई कख्खां दी दुटी कुल्ली तों घन दौलत सदके कीती ए इस सुख नींदर अब मुल्ली तों

एह रात मुखां दी दाता ए दर्दन है एह मज़दूरां दी ''राय'' है नशा जवानी दा एह मस्ती भरी सहरां दी

तीवीं

तीवीं इक अलौकिक वस्तु घटना नवीं रचावे आपे वन्दे पैदा करदी आपे ही भडकावे। आपे वन्न विठावे दुनियां आपे आन छुड़ावे, सुन्द्रता दी सोहनी स्रत ग्रीत दी रीत सिखावे।

तीवीं जहरा रूप रब्ब दा दो जगत दी वाली दुनियां वाग बहार अचंभा तीवीं उस दा माली

कवि नु मेहना

गीत सुना कोई गीत सुना जा गीतां दे विच प्रीत सिखा जा

त्रो कमली दे प्रेम कन्हैया—डगमग डोले दिल दी नैया दिल दर्दी दा भरया मेरा—तुं वे खबरा दोश न तेरा

पर तुं सज्जनां किव कहां वें — गुंगी कुद्रत जीभ लगां वें तुं ते रमज खुदाई जानें — मेरे क्युँ न मेद पछानें

तकन तैंनु लोक हजारां-खड़कन दिल दिश्रां गुजियाँ तारां किस ततड़ी दा दिल न डोले-दिल डोले पर मुँह न खोले मेरी वी इक मन जा माहिया-प्रेम दा वज्जे होल भराईया

तुं ते मैं नुं इक बना जा गीत सुना कोई गीत सुना जा

तेरी हैं इक दुनिया न्यारी खुह ते पानी भरदी नारी—वेख के सारी होश विसारी गोरी दा जद चूड़ा छनके—खिलर जांदे मन दे मनके

हुट जावे तेरे दिल दी माला — निकल जावे सबर दिवाला विनां प्यासीं पानी मंगें — विट विट तकें मूल न संगें

तकें मांग सन्द्रां वाली — नैनी कजला धारी काली नीवियां नजरां शर्मी भरियां – गोरी बांह विच वंगा हरियां

उठदा जोवन नवीं श्रंगूरी - कूले हथ ते लझ खजूरी श्रोदा पानी भरना चाहवें - श्रापे भरया घड़ा चुकावें लक विच घड़ा गुलेला जापे—हो जावें तुं वायल आपे बनें उसदा प्रेम पुजारी—मैं कर्मा दी मारी वारी

> भीरा खैर प्रेम दा पा जा गीत सुना कोई गीत सुनाजा

> > फिर खेतां विच निर्धन नारां सिट्टे चुगदियां तक सिलेहारां

श्रोनां विचों इक सिलहारन — अल्हड़ अते मिट आर गवारन श्राखें अल्हड़ दिल दी कोरी — डाका मारे करें न चोरी श्रोनें दिल नहीं अजे बटाया — नैनां दा नहीं जादू पाया वेसमभी विच हाले बीती — सांभी नहीं जवानी कीती

शरमांकल है सोहल सुनवर्खी—गम सवारी श्रल्लाह रक्खी गोरा रङ्ग शरवती अवखां—चढ़दा रूप दिखावे दक्खां जोवन ते श्रल्लाह दीश्रां रक्खां

फुलकारी दी बुकल मारी— ज्युं सद्शं दी भरी पटारी सोहनी सी त्रो हैसी जिन्नी — ज्युं सावण विच चीकड़ भिन्नी चीज वोहटी कोई नजरी आवे — ओदा जोवन इंज सहावे ओदे लई तूकानवी तोलें — ओदी खातिर भूठ वी बोलें मेरा दिल मिट्टी विच रोलें

मिट्टियाँ २ सुरां सुनाके—मेरे दिल ते जाद् पाके हुन क्युँ गल्लां विच टरकावें—मेरी क्युँ न आस पुजावें

मन्नवी जा हुन जानवी दे तूं — मार प्रेमदी खानवी दे तूं हाड़े हाड़े आस पुजा जा गीत सुना कोई गीत सुना

जी चांहदा ए गीत सुनावां — गीतां दे विच प्रीत सिखावां प्रेम दी दुनियां दिलादे अन्दर—प्यारदी दुनियां मनदे मंदिर

पर दुनियाँ दे भगड़े भेड़े—हिंदु मुस्लिम नवें बखेड़े पंडित भुल्लां मार मुकावां—पहिलों मस्जिद मन्दिर ड्रावां अपना रब्ब आजाद करावां फिर मैं हैनुं गीत सुनावां—गीतां दे विच प्रीत सिखावां आ हुन गीत देश दे गा जा देश दी सेवा तन मन ला जा गीत सुना कोई गीत सुना.....

—प्रकाशः

टैगोर

कवि सम्राट गुरुदेव टैगोर दी याद विच दो हंजू

मौत वैरने मूल न तरस आया, सानुं जस्त्रम जुदाई दा लौंदिआं नी। अदबी दुनियां दे विच हनेर फिरया,

तुं की सोचया न्हेर बरतांदिश्चां नी। साड़ा शायरां दा कोहनूर हीरा,

खो लयाई अवख परतांदियां नी। वे दरद वे रहम हेंसआरिये नी,

लाई देर न केहर कमांदियां नी।

श्रोदे दर्शनां नुं दुनियां तरसदी ए श्रोदे कदमां ते सजदे जहान कीते श्रो ते गुणां दा गुथला सी गुण श्रोदे हुंदे नहीं बयान बयान कीते

श्रोदियां पढ़ांगे नज़मां कहानियां चुं,

जुगां तीक श्रो रहेगा याद सातुं। भरियां सद्दरां ते पानी फेरया ए,

सदा वास्ते कीता न शाद सानुं । ज्ञाप खम्ब छुड़ा के उठ तुरयों,

तुं ते करना सी अजे आजाद सानुं। तेरे बाज हुन देवेगा कौन दस्सीं,

साड़ी कविता दी गुरु जी दाद सानुं।

बूटा सभ्यता दा लाया दिस्से सानुं

तेरे शांति निकेतन दे तम्बूआं चों

दिस्सी कवि दी आखिरी शान सची

उलकां मार दी ओद्यां लम्बूआं चों

IN THE PERSON NAMED IN THE PARTY NAMED IN

धनी कलम दा सचा जुवान दा सी,

चोदी कलम विच डाड़ी तासीर लोको।

लिखन वाली है सोने दे अक्खरां दी,

त्रोदी कलम दी इक २ लकीर लोको।

पलट देवे जहान दे नकशयां नुं

ओदी अकल ते ओदी तदबीर लोको ।

च्यो ते जापे मसीह दा बीर कोई,

DESCRIPTION DO

जापे इस्तरां श्रोदी तसवीर लोको ।

''राय'' जियुदा रहेगा रब्ब वागूं मौत आवे न कदी वी शायरां नुं मौत आवे न कदी बहादुरां नुं मौत औंदी ए बुजदिलां कायरां नुं

शहीद

I SHIR THE S. IN IS DON'T LIKE

स्वर्ग वासी एस एस चरण सिंग जी शहीद पंजाशी माँ दे सुच्चे मोती सन जिनां दी चमक अते प्यार भरी याद खासकर पंजाबी साहित्य दे प्यारां दे दिलां विच सदा लई घर कर गई है एह चार सतरां ओनां दे याद लेखे अपने दिल दी सहर पूरी कर रिहां हां।

हाए सजन जी जई कीती जे —जो सारी उमर न असे गी नित रत्त जिगर दी अक्खां चो-यन २ के अथं रु इसे गी

हितकारी जेठे पुत्र सो—ंजाबी मां दुखआरी दे कुज ठेड़े खांदी उद्दीसी—फिर फुट्टे कर्म विचारी दे तुं हैंस सें मान सरोवर दा—तु मोती पया लुटौंदा सें हाँ मात लोक विच रवर्गा दा—तुं जीवन पया वितौंदा सें

दरबार तेरे नाल सजदे सी — राजे महाराजे यार तेरे अलने नहीं मात पंजाबी नुं — जुग्गां तिक्कर उपकार तेरे

जियुंदे जी तुसीं शहीद बने-फिर पर के होर की होना सी पर तेरे सज्जन मित्रां दी-किस्मत विच लिखिया रोना सी

हुन जी जी दरद जितां दा ए—इक टीस कलेजे पैंदी ए बस याद तेरी साह सत सारा—इक हौंक ही धृह लैंदी ए

तुं अमर हो गया मोया नहीं — परजी उंदे मरने पाये नीं सीने विच मात पंजाबी दे — कोई फट अवल्ले लाये नी

कवियां दी केडा कदर करे — जद आगू पत्तरा हो गये ने ''जसवन्त'' जये जिल्ला शायर — अज तेरा रोना रो गये ने

मनाह दीग्रा लैहरा

SANSON THE THE PARTY OF BUILDING

आशिक दी निशानी ओ जंड बनां दा महती दा सोमा ए बैहन भनाह दा हुहनां दीओं हरदम जिथे शिखर दोपहरां एह वेग भनाह दा इशके दीओं लैहरां उठ २ के बैठन बेह २ के उड़न एह मदन त'गा कईयां नुं कुड़न

फरते विच फस गई कोई कंज क्वारी श्रोदे सबर नुं फेरी किसे हूंज बहारी श्रो इशक च पक्की जद आपां खो गई बदनामी अोदी तद कुद्रत धोगई एह मिट्टिया पीड़ा एह गूजियाँ चाटा एह वैहन भनाह दा आशिक दीआं वाडां एदा पानी बाले आशिक दे अन्दर विरहों दे लम्भू प्यारां दीत्रां लाटां एदे कएडे फिरदे हीरां ते रांभे वट गई जवानी होए जोवन सांके तन खाक रमा के त्रोनां हृदय मांके दुनियाँ दे भाने गये जगों वांके श्रोनां दुनियाँ मारी श्रोनां इशक ज्वाले योनां जिन्दड़ी कीती इक प्रेम हवालें एह लैहर भनाह दी इक श्रीखी फाई कोई लाह न सकया गल जिसने पाई एह गंड इशक दी कोई विरला खोले एह इशक दा जादू जो सिर चढ़ बोले एह वैहन भानाह दा लैहर भानाह दी

सेहरा

मटकां नाल पई शहर दी कहे मालिन.

चम्त्रे मोतिये दा लटक दार सेहरा।

किसे लाडले दे सिर ते बन्नना ऐ.

कीता सहरां नाल त्यार सेहरा।

सोहने मुख नुं नज़र न लग जावे,

चौर मलदा ए पहरेदार सेहरा।

ऐस सेहर दी दीद नुं तरस दी ए,

लैके सहरां दा कोई नार सेहरा।

इक सोहन सेहरा सोहने सीस उते,

इक फुलां दा खिड़या गुलजार सेहरा।

सहर मां दी पिता दी खुशी सेहरा, जापे बहिनां दा मोह प्यार सेहरा।

है प्रकाश दा रूप निहार उत्ते,

चानन मुख दी वखरी शान जापे। भरिया खुशी दे नाल परिवार सारा,

मेहरबान सब चतर सुज़ान जापे। ताहियों घेरिया चाचियां भाभियां ने,

जानो ऐस विच कृष्ण भगवान जापे। श्रंक साक भरा ने खुशी सारे,

भिरया खुशी दा सारा जहान जापे।
रल के भाभियां चाह मिलहार कीते
सुर्मा पाके देवर शृगांरिया ए
भैनां सोहिलड़े गों के बांग गुन्दी
दाना वीर दी घोड़ी नुँ चारिया ए

चढ़ना घोड़ी ते बन्नने सोहन सेहरे, सदा रक्खी बहार तुं याद बीबा। बोल भिट्ठड़े ते चोहल सालियां दे, सदा लभने नहीं स्वाद बीबा । तैनुं सोहीनयां तारा थीं बन्नयां ऐं,

हो सकदा नहीं आजाद बीबा । पक्की गल है बन्न लें पग पल्ले,

लड़ लग्गी नुं रखना शाद बीबा।
जरा हस्स के बोले ते फुल किरदे
अज्ज गल बी जापदी राग तेरी
अलकछैल छबीलया दुनी चन्दा
देनी नार दे हथ विच बाग तेरी

श्री मस्म निर्छल प्रेम भिनी,

रब्ब घड़ी है आप तसबीर ओदी!

भ्रुसी तेरे प्रेम प्यार दी ए,

तेरे हथ दे विच तकदीर ओदी!

तेरे घर दी सुघड़ बज़ीर चातर,

कम आवेगी तेरे तदबीर ओदी!

वेले सुखां दे ओस दा बोल जादू,

बेले दु:ख दे गल अकसीर ओदी!

तेरे प्रेम दी दात तों खुशी होके लाजवन्ती दा फुलबी महकया रहू भिनी २ खुशबू तुँ सुघंदा रहीं तेरे दिल दा कंवल बी टैहकया रहू

हरी करेगी वंश प्रकाश तेरी,

गूड़ा रखना श्रेम प्यार दोवां । इक जोत दो मूरती बने रहना,

इक दुजे दा आसरा धार दोवां। इक मत्थे दा भाग सुहाग दुजा,

रल के गावना सोरठ मल्हार दोवां। जन्म जन्म दे मिले त्रो फेर साथी,

धर्म पालना नर ते नार दोवां ।
पूंजी सुखां दी सोमा है कविता दा
प्यारां भरिया है असली ते नार सेहरा
कदर प्यारां दी करी जसवन्त राय
नारी श्रेम प्यार उद्धार सेहरा

सिखिया

तेरा कंजका रूप वटा दिता.

एहनां सगनां दे लावां ते फेरियां ने ! तैनुं किसे हथ फड़ा दिता,

असां आप ही मापियां तेरियां ने। तेरा देस परदेस बना दित्ता,

धीये तेरे ही वडे वेडेरयां ने । अज किसे दे गाने ने बन्निया ऐ,

> जिन पालिया सी प्यारां मेरियां ने । अज आई ऐ स्त्री रूप अन्दर सारे ओपरे मां पियो जाये हो गये थिये प्यारीए तेरा प्यार हुट्टा असीं अपने तेरे पराए हो गये

तेरा द्जा सावित्री जन्म होया,

बदल गया ऐ अज संसार तेरा। ऐबगाना ई धीयां दा धन हुंदा,

असल मालक है एही भरतार तेरा। मापे पालन दे चोर सी बच्चीए नी,

कर चुके ने लख मल्लाहार तेरा । सत्यवान सावित्री लै चल्ले,

> श्रीखा करेगा सानुं प्यार तेरा । श्राप वेहड़े दा रौनक नुं तोरया ऐ डारों विछड़ी क्रुंज कुरला चल्ली साडे प्यार नृं तोड़ के कच्च बांमन चूड़ेलाल सोहाग दे पा चल्ली

धर्मी बावल ने कन्या दान कीता, तेरी मां दा हुन आ जोर नहीं यों। धी रजयां दा मान तोड़ देवे,

तेरे बाबल दी अज ओ तोर नहीं यों। पन्ले गलां च चाचे ने हथ जोड़े, दाता दानी ते धर्मी है चोर नहीं यों। धी देके पुत्र खरीदया ए,

हुन ऐ अपना ऐ कोई होर नहीं यों। ओम वेद प्रकाश उदास वीरे कृष्णा शारदा नाले सुराज तिन्ने इन्हां कन्या जग रचा दिता करन वीर बाबल चाचा काज तिन्ने

इसना खेड़ना मुकया अज तेरा,

हुन ते बन्धन प्रतिज्ञा जग दी ए। तेरे हथां ते फुलियां बीर पौंदे,

लाज रखनी पिता दी पग दी ऐ। श्रीखाराह गृहस्थ दा चलना ऐ,

तेज स्त्री दा शक्ति अग दी ऐ। मिठा बोल के दिलां नुं मोहत करना,

आखन घी ऐ किसे सुलगदी ए ।
मैंनुं शारदा ने मुड़ २ पुछना ऐ
किथे गयी सावित्री भैन मेरी
मैं की दसांगी दस की सकना ए
शकल दिस्स उदास बेचैन मेरी

रल के सारे ही वचयां खेलना ए,

गल्लां तेरियां करांगे याद करके ।

चमन लाल दे रहम ते गल सारी,

कृप्णा दर्शन लई आखु फरियाद करके ।

तुं पर भुल के करीं न याद सानुँ,

खुशी रखीं तुं सौहरे आबाद करके।

ऐस लाल दे चमन दी बनी माली,

रखीं अपने आपनुं शाद करके।
सेवा करी तृंरज के सौहरयां दी
गल माला प्रेम दी छड़ीं पा
असीं कुज नहीं लगदे बच्चिये नी
सानुं उक्काहीं दिलों भुला छड़ीं

प्रकाश

गीत

परदेसी माहिया तेरी आं कर पूरियां सहरां मेरी आं परदेसी माहिया.....

माहिया आ रल के बहिये वे-कुज दिल दे वेदन कहिये वे देवें इक हो के रहिये वे.....दोजैंगी हट जाए वे हट जाये वे परदेशी माहिया

देसों परदेस चंगेरा नी — जिथे माही ला लया डेरा नी जिथे चीरे वाला मेरा नीचल अभेथे लै चल

(秋火)

लै चल वे परदेसी माहिया.....

भैनुं चड़ी जवानी सकदी — लूं २ विच जाद फूक दी गलियां विच फिरदी क्रक दी......सोगन दश्रा साईयां साईयां वे परदेसी माहिया.....परदेसी माहिया तेरी आं

> गाना ततड़ी नुं चन्न तरसात्रो न दिल होर किते हुन लात्रो न

मेरी लंग दी ए रात उड़ीकां विच तुसी रख दे ओ रोज तरीकां विच हुन होर तरीकां पाओ न ततड़ी नुं चन्न तरसाओ न.....

रैनू दरश तेरे दी सिक माहिया-दिल दोवां जीयां दा इक माहिया इस दिल दियां वंडियां पाईयो ततड़ी नुं चन्न तरसाओ न.....

गीत

इक वारी वेड़े आ वड़ दे मैं वंडा शरीनियां ढोला

तुर गया माही चित न लगदा-मेरे सिर ते मेंहना जग दा रूप परौना चार दिनां दा—पाप दी बेड़ी न चढ़ वे इक वारी वेड़े आ बड़ वे......

रूप ते जग बदनीतां थीं वे — बदिकरमत रस रूप न पी वे ढलया रूप गिटक रह जानी — नाल नसीबां न लड़ वे इक वारी वेड़े आ वड़ वे...... दिल्ली भावें दखन जावीं—साधां नाल प्रीत न पावीं घर जोगा नहीं रह जावेंगा—उलटीयां पट्टियां पढ़ पढ़ वे इक वारी वेड़े आ वड़ वे..... मैं वंडां शरीनियां ढोला

गज़ल

तेरी स्रात किसे स्रात मेरे नैनीं समा जावे पये कुज ठंड सीने विव लग्गी दिल दी बुक्ता जावे

करां दरशन न दिलवर दे ते मेरी जान जांदी ए तेरा लुक लुक के बैह रहना किते जानों न खा जाबे

मैं स्रो रांका नहीं आं हीर हथ्थी तीर वैठांगा मैं साहिबां नाल लै निकलांगा मार्बे सिर चला जावे

भलां "जसवन्त" तैनुं किस किहा सी इशक गल पालें दिता दिल जान वी देदे मतां कोई लीक ला जावे

शाम नुं राधे कहे तोड़ निभावीं वेखीं लाके दिल होर किते छोड़ न जावीं वेखीं

तेरे दर्शन दे विना चैन न आवे शामा तीर विरहों दे चला जखम न लावीं वेखीं

विन्दरावन छोड़ के जावीं न सांविध्या सुन्दर दर ब दर प्यारियां सखियां न रुलावीं वेखीं

लाईयां दी लाज रहे याद रक्खीं श्रो वेला कीते बचनां नुं पिया पाल विखांवीं वेखीं

राघे दा धर्म वी तुं जान वी तुं 'जसवन्ता'' प्रेम दी कदर करीं धर्म कमावीं वेखीं

जोवन साम्भ के चल नीं जोवन तेरा ठाठां मारे — कजला पाके नैने शिंगारे प्रेम सनेह ईंज मटआरे — न नडयाँ नुँ घल नीं जोवन साम्भ के चल नीं

लुकदी नई मस्तानी अक्खनी-रूप जवानी सांम्भ के रक्खनीं कांग अठिलवीं देवे दक्ख नी-हड़ चढ़दे नुं ठल नीं जीवन सांम्भ के चल नीं

रूप सुहपन नजर न लाई -बीत न जावे भैन अनजाई नित सुहाग दे सोहले गाई -रब्ब मन्ने मेरी गल नीं जोबन सांस्भ के चल नीं

भजन

राम भजो मन राम..... मुसाफिर इह दुनियाँ है चार दिहाड़े—गल विच लखां पैन पुवाई चीख चहाड़ा तन मन साड़े—दुनियाँदारी दे विच फस के

> क्युं छडया हरिनाम-मुसाफिर राम भजो मन राम......

मैहिल माड़ियां कुड़ पसारे—धीत्रां पुत्र भूठे लारे इह मांडे सब भजन हारे—मेर तेर नुं मूर्ख तज के

नेकी कर निशकाम.... मुसाफिर

राम भजो मन राम.....

राम भजो श्रीर जन्म सुधारो—मोह माया दी मैल उतारो मन दी चश्चलताई मारो—जन्म सुफल 'जसवन्त' बनालै

भज के सीताराम ... मुसाफिर

—प्रकाश

सावन दे दिन आए सावरिया (२)
सावन दे दिन किन मिन किनयां

प्रौजां मानन जिनयाँ खिनयाँ

प्रीतम मेरे भा दियां बिनयाँ

सावन मूल न माए सावरिया...

सावन दे......

बागां दे विच पींघां पईयां

रल मिल बन ठन भूटन सईयां

हस २ सौन मनाए-सावरिया...

सावन दे.....

(१६३)

सावन दी ऋतु पींघ हुलारे जोवन मितियां कैहर गुज़ारे चेते औदे प्रेम प्यारे

> कोयल गीत सुनाए-सावरिया... सावन दे.....

> > —प्रकाश

होल मैं तेरी मंग वे डिठियां बाभों प्यारा लगदा प्यार जतांदे डर है जग दा श्रजे ते श्रोंदी संग वे..... होल मैं तेरी मंग वे..... माईया एहो सहर मेरी मेरा रूप जवानी तेरी सांभे जावन लंग वे..... होल मैं तेरी मंग वे.....

(\$\$\$)

प्रीतम दी छैल जवानी नी मेरा जोवन प्रेम कहानी नी रल मिल के रज २ माननियां.... चिटियां

कोठे उत्ते चिड़ियाँ सईयो नी वेड़े विच कुड़ियाँ

उड़ जाना चिड़ियाँ पलो पली—तुर जाना कुड़ियां घरोघरी

छड़ जाना वीर भरांवां नुं छड़ जाना माँ पिश्रो जायां नुं खबरे श्रो कौन परौना नी लड़ जिस दे सईयो लौंना नी जे सखत तबीयत होई नी मैं जियुदी जाने मोई नी

(*年)

कर्मा नुं बैह के चीकांगी वीरे नुं नित उडीकांगी कद लिखीयां मुड़ियां सईयो नी वेड़े दीआं कुड़ियाँ जे लावां दा वनजारा नी कोई होत्रा प्रेम प्यारा नी नकांगी पैलां पावांगी मैं जोबन रूप हंडावांगी इह किस नुं कथा सुनावांगी मुड़ के नई जुड़ियां सईयो नी बेड़े दीयां कुड़ियाँ सईयो नी कोठे उते चिड़ियाँ

इह नई' परौना मेरी मां दा
चीरे वाले जया लगदा नी
सईयो......(इह नई परौना मेरी मां दा)
श्रापां भुलदी जां मस्तानी
यन करदा कर लां मनमानी
एवं न जावे छैल जवानी
डर है वीर भरां दा
इह नई' परौना मेरी मां दा
मां मेरी दा आटा भुड़के
श्रंग २ सईयो मेरा फुड़के

(200)

Fac III TO THE STATE OF

71 37 5 61 11

D-5 (5) 1.95 (7)

भूठा बोल उस कां दा इह नई परौना मेरी माँ दा चीरे वाले जया लगदा नी (सईयो इह नई परौना मेरी माँ दा)

गज़ल

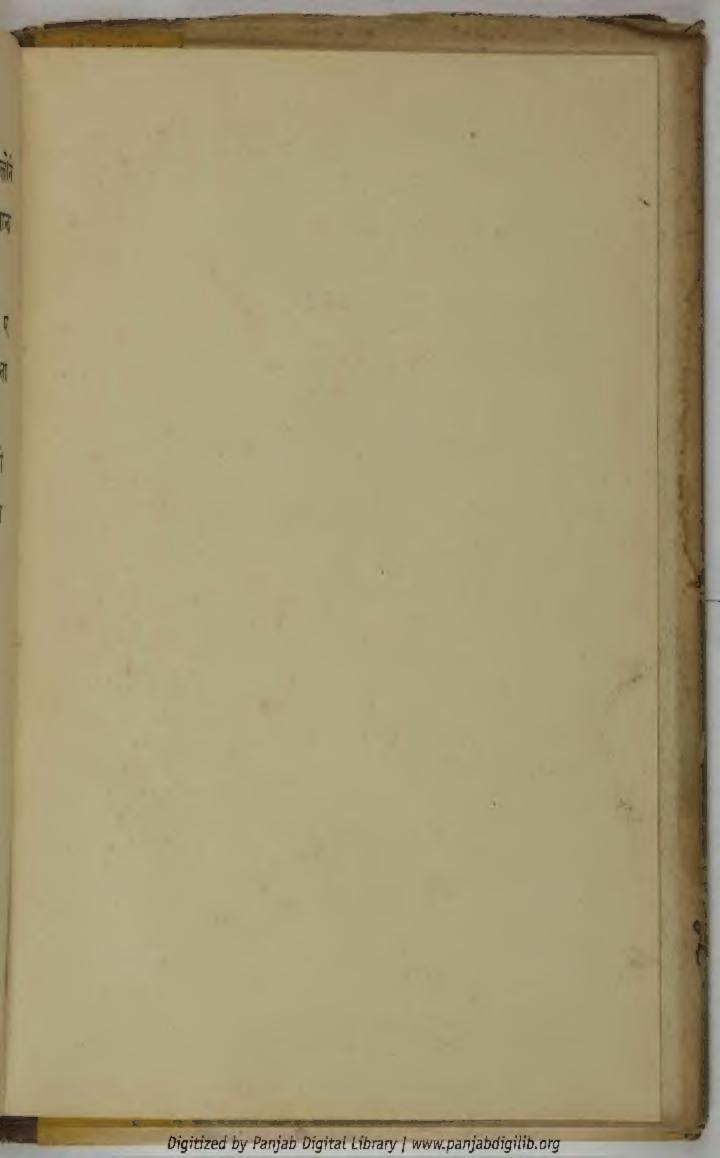
मुड़ २ के नहीं श्रीना प्यारां दां जमाना हुन वेला सुना सजनी प्यारां दां तराना मुड़ २ के नहीं श्रीना प्यारां दा जमाना

एह उठदी जवानी ए नवें खिड़न शगूफे एह फुटदी श्रॅगूरी ए बहारां दा जमाना

ज़ोबन एँ जवानी ऐं नवें रंग तरंगां एह चावां दे दिन ने मलहारां दा जमाना ज़ोबन दी अलक लोर तेरे नैन सलोने लट बौरी जुलफ लटके शिकारां दा जमाना

दिल प्रेम तरङ्गां च पया भूम रहया ए बेहोश जवानी ऐं खुंमागं दा जमाना

"जसवन्त" लुटा बैठीं न सब रूप जवानी तुं ऐं अनभोल मकारां दा जमाना



B-2749

